अंक—06 2024—25
Volume-06 Year 2024-25

विहान

विचारों की महाविद्यालय पत्रिका

षष्ठम् संस्करण

सरिया कॉलेज, सरिया

सह—सम्पादक
अरूण कुमार

सम्पादक
प्राचार्य

CONTENT

	Page No.
1. Digital Learning in Education	10-12
2. आधुनिक काल में हिन्दी एवं संस्कृत साहित्य का महत्व	13-15
3. मध्यकालीन भारत में धार्मिक आन्दोलनों का ऐतिहासिक तुलनात्मक अध्ययन	16-18
4. कन्या भ्रूण हत्या एक सामाजिक चिंतन	19-22
5. झारखंड राज्य की राजनीति में महिलाओं की भूमिका	23-26
6. A Study Of Rustic Life Aspects In Selected Poems Of Sitakant Mahapatra And Jayant Mahapatra	27-28
7. आधुनिक समय में मूल्य–संक्रमण	29-32
8. आओ मिलकर पेड़ लगाएँ	33-33
9. Importance of Research in Geography	34-35
10. Why Study Sociology?	36-36
11. झारखण्ड़ की राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका का विश्लेषणत्मक अध्ययन	37-38
12. हाँ नारी हूँ मैं	39-39
13. तारों से ज्ञान	40-40
14. Always There	41-41
15. ज़िन्दगी	42-42
16. Make It Green	43-43
17. माँ	44-44
18. समाज के लोग	45-45
19. Pressured for Success	46-46
20. सफलता	47-47
21. प्रेरणा	48-48
22. Priority	49-49

शासी निकाय के सदस्यों की सूची

1.	श्री नागेन्द्र महतो	अध्यक्ष
2.	श्री मनोहर सिंह	सचिव
3.	डॉ० एस० जेड० हक	विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग
4.	डॉ० संतोष कुमार लाल	प्राचार्य
5.	उपायुक्त (गिरिडीह)	सदस्य
6.	श्री राजेश कुमार जैन	दानदाता सदस्य
7.	श्री रविन्द्र कुमार मिश्रा (अग्रेजी विभाग)	शिक्षक प्रतिनिधि

आंतरिक गुणवता आश्वासन प्रकोष्ठ (I.Q.A.C.) के सदस्यों की सूची

1.	डॉ० संतोष कुमार लाल	प्राचार्य
2.	डॉ० गंगानन्द सिंह	शिक्षाविद् सदस्य
3.	श्री धनंजय कुमार	प्रशासनिक अधिकारी
4.	डॉ० राजेश कुमार सिंह	सामाजिक सदस्य
5.	श्री राजेश कुमार जैन	प्रबंध सदस्य
6.	श्री पंकज अग्रवाल	उद्योगपति सदस्य
7.	श्री रंजीत कुमार मंडल	पूर्ववर्ती छात्र सदस्य
8.	श्री अरूण कुमार (अर्थशास्त्र विभाग)	शिक्षक सदस्य
9.	श्री कार्तिक प्रसाद यादव	शिक्षक सदस्य
10.	डॉ. प्रमोद कुमार	शिक्षक सदस्य
11.	श्री आनंद प्रसाद यादव	शिक्षकेत्तर कर्मचारी सदस्य
12.	प्रेरणा कुमारी	छात्र सदस्य
13.	श्री असीत दिवाकर	समन्वयक

सत्र 2024–25 के सर्वोच्च प्राप्तांक पाने वाले छात्र का नाम :–

1. राजीव सिंह (वाणिज्य)
2. साहिल प्रियांशु (भूगोल प्रतिष्ठा)

अकादमिक सत्र 2024–25 में महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की सूची

क्र. सं.	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	संसाधन व्यक्ति का नाम	विभाग	आयोजनकर्ता
1.	संविधान में"तीन कानून" विषय पर संगोष्ठी	09/07/2024	Prof. Arun Kumar	Political Sc.	Prof. Arun Kumar
2.	Seminar with field activities on Environmental benefit with conservation Measures	02/09/2024	Dr. S.K. Lal	Botany	Miss Chayra Nisha Aind
3.	हिंदी दिवस पखवाड़ा संगोष्ठी	13/09/2024		Hindi	Prof. R. Hazam
4.	निबंध लेखन प्रतियोगिता	18/09/2024		Hindi	Prof. R. Hazam
5.	स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता	19/09/2024		Hindi	Prof. R. Hazam
6.	Field visit to Birhor Tanda Village	01/10/2024	Dr. Sweta	Sociology	Dr. Sweta
7.	मध्ययुग में दास प्रथा	04/10/2024	Prof. K.P.Yadav	History	Prof. K.P.Yadav
8.	लोकतंत्र एवं जनसभागिता संगोष्ठी	04/10/2024	Prof. Arun Kumar	Political Sc.	Prof. Arun Kumar
9.	Workshop on How to write Newspaper Reports and paragraphs	05/10/2024	Prof. R. K. Mishra	English	Prof. R. K. Mishra
10.	Seminar on Ozone Layer Depletion	05/10/2024		Geography	Prof. Asit Diwakar
11.	Seminar on Entrepreneurship	20/10/2024	Dr. S. K. Lal	Commerce	Dr. S. K. Lal
12.	Seminar on Entrepreneurship	22/10/2024	Prof. Sujeet kr. Mathur	Economics	Prof. Arun Kumar
13.	मतदाता जगरूकता रैली	12/11/2024	Prof. Arun Kumar	Political Sc.	Prof. Arun Kumar
14.	बाल विवाह	12/11/2024	Dr. S. K. Lal	History	Prof. K.P.Yadav
15.	सिंधु सभ्याता का विश्लेषणत्मक अध्ययन	12/11/2024	Prof. K.P.Yadav	History	Prof. K.P.Yadav
16.	"संविधान दिवस"	26/11/2024	Prof. Arun Kumar	Political Sc.	Prof. Arun Kumar
17	Village Survey for Research Project	09/12/2024		Geography	Prof. Asit Diwakar
18.	Seminar on Cyber Security	10/12/2024	Sri D. K. Ram (SDPO)	Commerce	Dr. S. K. Lal
19.	Students Exchange	17/12/2024		Commerce	Dr. S. K. Lal
20.	Students Exchange	17/12/2024		Economics	Prof. Arun Kumar
21.	Students Exchange	17/12/2024		Political Sc.	Prof. Arun Kumar
22.	Faculty Exchange	17/12/2024		Commerce	Dr. S. K. Lal
23.	Faculty Exchange	17/12/2024		Economics	Prof. Arun Kumar
24.	Faculty Exchange	17/12/2024		Political Sc.	Prof. Arun Kumar

25.	Faculty Exchange	17/12/2024		Botany	Miss Chayra Nisha Aind
26.	Faculty Exchange	17/12/2024		Zoology	Miss Alka Rani Jojo
27	Birhor Tanda Village primary Survey	07/01/2025		Geography	Prof. Asit Diwakar
28.	विश्व हिन्दी दिवस संगोष्ठी	10/01/2025		Hindi	Prof. R. Hazam
29	Workshop on Time Management	13/01/2025	Prof. R. K. Mishra	English	Prof. R. K. Mishra
30.	P.T.M.	15/01/2025	Parents	English	Prof. R. K. Mishra
31.	Orientation program on Geography for Sustainable development	24/01/2025	Prof. Asit Diwakar	Geography	Prof. Asit Diwakar
31	Research Methodology	04/03/2025	Dr. Deepti Barla	Economics	Prof. Arun Kumar

अन्नपूर्णा देवी
ANNPURNA DEVI

सत्यमेव जयते

महिला एवं बाल विकास मंत्री
भारत सरकार
Minister of Women & Child Development
Government of India

0 3 MAR 2025

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि सरिया कॉलेज, सरिया के द्वारा 'विहान' पत्रिका के छठे संस्करण का प्रकाशन शीघ्र होने जा रहा है।

कॉलेज द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'विहान' का शाब्दिक अर्थ है भोर या सूर्योदय। यह नाम संस्कृत शब्द 'विहाना' से लिया गया है, जिसका तात्पर्य है प्रकाश फैलाना जो अपने आप में अद्भुत एवं आकर्षक है। आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि नाम के अनुरूप पत्रिका में वर्णित सामग्री से विद्यार्थियों के साथ ही आम जनमानस को एक नई दिशा एवं रोशनी प्रदान करने में सफलता मिलेगी।

पत्रिका के सृजन में विद्यालय के प्राचार्य, शिक्षक एवं बच्चों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मैं विद्यालय के प्राचार्य, संपादक एवं संपादक मंडल के साथ महाविद्यालय परिवार के समस्त सदस्यों एवं विद्यार्थियों को बधाई देती हूँ जिनके रचनात्मक प्रयास से पत्रिका के आगामी अंक का सफल प्रकाशन होने जा रहा है। इस श्रेष्ठ प्रकाशन हेतु अनंत शुभकामनाएं।

भवदीया,

(अन्नपूर्णा देवी)

Room No 301, 'A' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi 110001, Tel. No. : 011-23071331
E-mail : min-wcd@gov.in

Prof. (Dr.) D. K. Singh
Vice-Chancellor
प्रो. (डॉ.) दिनेश कुमार सिंह
कुलपति

Phones :
(O) 06546-264279
(R) 06546-298146
(M) 08987791005
E-mail :
vc@vbu.ac.in
Website :
www.vbu.ac.in

VINOBA BHAVE UNIVERSITY
HAZARIBAG – 825 301, Jharkhand, India

Ref. No. VBU/VC/ 775/2025   Date: 27/03/2025

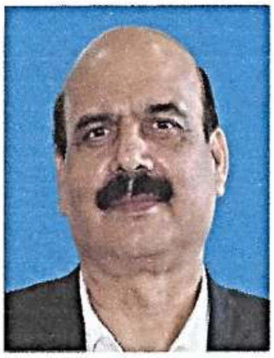

MESSAGE

I am delighted to know that Sariya College, Suriya, Giridih is going to publish the sixth edition of its magazine 'Vihan'.

The College magazine is a platform for the students and staff to express their creative pursuit which develops in them originality of thought and perceptions. The contents of the magazine reflect the wonderful creativity of the budding talents and gives them an opportunity to share their views in the global scenario.

I extend my warm wishes to the Principal, Editorial team and students on the publication of Vihan' and wish them to continue this journey on the road of excellence.

(D. K. Singh)

प्रो० (डॉ०) मिथिलेश कुमार सिंह
वि०वि० प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
एवं
कुलानुशासक
एवं
अध्यक्ष, मानविकी संकाय
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग

Vinoba Bhave University,
Hazaribag-825301

Email.- onlymithilesh@gmail.com
mithilesh.max@gmail.com
Mob. No.-7463041969,
7488220675

संदेश

अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि सरिया कॉलेज, सरिया की ओर से ***'विहान'*** पत्रिका का छठा अंक प्रकाशित होने जा रहा है।

किसी भी शैक्षणिक संस्थान की पत्रिका उस संस्थान की शैक्षणिक एवं शिक्षणेतर गतिविधियों का लेखा जोखा पेश करने का मंच और आईना होती है। ***'विहान'*** सरिया कॉलेज के अतीत और वर्तमान के साथ–साथ भविष्य की दिशाओं को भी अभिव्यक्त करने में समर्थ रहेगी। यों भी ***'विहान'*** नयी सुबह का ही पर्याय है और इस पत्रिका में हमारे विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को मंच मिलेगा, यह सबसे महत्तवपूर्ण पहलू है। विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारने में शिक्षकों की भूमिका सबसे अहम होती है।

सरिया कॉलेज, सरिया के शिक्षक और विद्यार्थी इस पत्रिका के माध्यम से अपनी प्रतिभा और रचनाशीलता को उभारने में संपूर्णतः समर्थ होंगे। मुझे यह भी विश्वास है कि 'विहान' महाविद्यालय को नयी दिशा प्रदान करने में कारगर भूमिका निभायेगा।

सरिया कॉलेज के प्राचार्य, शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मियों और विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई के साथ–साथ ***'विहान'*** के स्वच्छ तथा सार्थक प्रकशन के लिए अशेष शुभकामनाएँ।

(प्रो0 (डॉ0) मिथिलेश कुमार सिंह)

सम्पादकीय........

सम्पादकीय ''विहान''का षष्टम अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। संपादक मंडल और प्रकाशन टीम का यही प्रयास है कि हर नये अंक के साथ इसकी गुणवत्ता में वृद्धि हो और पत्रिका प्रकाशन के उद्देश्य की पूर्ति हो सके। साहित्य समाज का आईना होता है और पत्रिका समय का पहिया जो भूत से सीख, वर्तमान को परख, भविष्य का रास्ता दिखाती है। हमने भी इस अंक के विषयवस्तु के केन्द्र में समकालीनता को ही रखा है। मकसद यह है कि समकालीन मुद्दों पर विद्यार्थियों, शिक्षकों के समझ को विकसित करना। समय के इस दौर ने हमें परिवार, समय एवं प्रकृति के महत्व को समझाया। साथ ही बाजार की वश में जीने वालों को भी यह सीख मिली कि मानव की वास्तविक जरूरतें काफी सीमित है, जिसकी आपूर्ति प्रकृति खुशी–खुशी करती आ रही है। बाकी चाह की पूर्ति तो दोहन से ही होती रही है। लेखकों ने जीवन, कार्य एवं राष्ट्र से जुड़े विचारणीय विषयों के बारीकियों को अलग–अलग नजरिये एवं विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में देखने की कोशिश की है। सरिया महाविद्यालय की प्रसिद्ध पत्रिका 'विहान' के इस अंक (अंक–06, भाग 6, वर्ष 2024–25) जो विगत 6 वर्षो से सतत् रूप से प्रकाशित हो रही है। इस पत्रिका में महाविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मौलिक विचारों के स्तरीय लेख प्रकाशित हुए हैं। इस अंक में कुल 10 आलेख, 10 कविताएं, एवं 02 कहानी है जिनमें हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा में लिखे गये हैं। ये लेख भाषा एवं साहित्य, दर्शन एवं आध्यात्म्य, पर्यावरण एवं प्रबन्धन जैसे अनेक विषयों एवं विधाओं से सम्बन्धित हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस अंक से वृहद पाठक वर्ग अवश्य लाभान्वित होगें। महाविद्यालय पत्रिका 'विहान' सूर्य की लालिमा से आगे बढ़कर सर्वत्र भरपूर रोशनी फैला रहा है! महाविद्यालय की यश पताका को चतुर्दिक फैलाने में यह अंक अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु मैं केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री, भारत सरकार, श्रीमति अन्नपूर्णा देवी, इस महाविद्यालय के अध्यक्ष माननीय विधायक श्री नागेन्द्र महतो, सचिव श्री मनोहर सिंह के प्रति दिल से आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी सतत प्रेरणा एवं उत्साहवर्धन से हमें पर्याप्त बल मिलता है। तदुपरान्त कुलानुशासक प्रो० (डॉ.) मिथिलेश कुमार सिंह, तथा अन्य अधिकारियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिनके द्वारा हमें बराबर सकारात्मक सहयोग मिलता रहता है। शासी निकाय एवं सम्पादक मण्डल के सभी सहयोगियों को भी धन्यवाद देता हूँ। अन्त में मैं 'विहान' कार्यालय के सहयोगी श्री अमरजीत कुमार प्रसाद को साधुवाद देता हूँ, जिसने कंप्यूटर टाइपिंग में मदद कर पत्रिका के प्रकाशन में भूमिका निभाई है।

DIGITAL LEARNING IN EDUCATION

Dr. Santosh Kumar Lal,
M. Com. (Gold Medallist), Ph.D.,
Principal,
Sariya College, Suriya

Time has changed the perspective of learning through digital mode. Previously, classroom teaching had more priority whereas in current trends educational institutions felt there is scope for globalization of education through the digital mode. Hence, the number of online courses has spiked significantly. Today the most preferred mode is Hybrid mode of education. Many educational institutions have considered 5 days in campus on the offline mode in campus teaching and one day online mode i.e. work from home.

The numbers of teachers who have made YouTube channels has increasingly rapidly. Digital learning has made education feasible for many who cannot attend any institution due to their personal problems like sole earner in the family, small children to take care, sick parents or any other personal problems. Apart from the above using technology even in class room teaching increases the understanding of the students. Videos and pictures have greater impact on the students rather than mere traditional teaching. The accessibility and quality of the teaching has improved due to digitalization.

The following are the Advantages of Digital Teaching

Digital education offers several advantages, transforming the traditional learning experience in positive ways. Here are some of the key benefits:

1. **Accessibility and Flexibility:**

- Anytime, Anywhere Learning: Students can access learning materials from anywhere in the world, at any time, making education more flexible.
- Learning for All: Digital education can break down barriers related to location, disability, and financial constraints. It allows students from remote areas or those with special needs to participate in the same learning opportunities.

2. **Personalized Learning:**

- Customized Content: Digital platforms can tailor learning experiences based on an individual's progress, interests, and learning style, allowing for more personalized education.
- Pacing: Students can learn at their own pace, rewatch lessons, and take breaks as needed, promoting deeper understanding.

3. Engagement and Interactivity:

- Multimedia Tools: Digital education incorporates videos, quizzes, interactive modules, and simulations, making learning more engaging and dynamic.
- Gamification: Many platforms use game-like elements to motivate students, making learning fun and competitive.

4. **Cost-Effectiveness:**

- Reduced Costs: Digital education can reduce costs related to physical infrastructure, textbooks, and travel, making it more affordable for institutions and students.
- Free Resources: There are numerous free or low-cost online courses and materials available to learners worldwide.

5. **Global Learning Opportunities:**

- Diverse Perspectives: Students can collaborate and interact with peers, instructors, and experts from around the globe, fostering a more diverse and enriched learning environment.
- Access to Top Educators: With digital education, learners can access courses and lectures from renowned institutions and educators worldwide.

6. **Skill Development:**

- Digital Literacy: Digital education helps students develop critical digital skills, such as navigating software, online research, and digital communication, which are essential for the modern workforce.
- Independent Learning: Digital platforms encourage self-regulation, critical thinking, and problem-solving, preparing students for lifelong learning.

7. **Real-Time Feedback and Assessment:**

- Instant Feedback: Many digital platforms provide real-time feedback on assignments and quizzes, helping students understand their mistakes and improve quickly.
- Automated Assessments: Teachers can use online tools to track students' progress, identifying areas for improvement and tailoring their approach to suit individual needs.

8**. Environmental Impact:**

- Reduction in Paper Use: Digital learning reduces the need for printed materials, contributing to environmental sustainability.
- Energy Efficiency: Though it requires devices, digital education can sometimes reduce energy usage in traditional educational infrastructures.

9. **Collaboration and Communication:**

- Discussion Forums: Digital platforms often offer forums, chat rooms, and group project spaces where students can collaborate with peers, facilitating teamwork and communication skills.
- Easy Communication: Students and instructors can communicate seamlessly through email, discussion boards, and virtual office hours.

10. **Flexibility in Learning:**

- When education is on digital mode, the students can access the google classrooms as per their convenience. It is possible for students to do more courses apart from one graduation. They can refer it many times for better understanding.
- Many online courses are designed in MOOCS and SWAYAM platform which the students can refer, this enabling student to earn and learn. Moreover, age is not a barrier in many online courses.

11. **Time Saving:**

- Travelling in various institutions is no more a necessity as many lectures are virtual in nature.
- It saves lot of time of the students and teachers as lectures can be delivered from home and students can sit in the workplace or home and attend their class.

12. **Economical:**

- Digital teaching are many a times very economical compared to going to colleges and learning. The colleges save on infrastructure and that concession of fees is given to the students.

13. **Better retention through interesting videos and audios**:

- Audio visuals help the students to have better retention of the concepts. Today many educational institutions have made creative visuals thus enabling the students to have better retention.

14. **Innovative ways of presenting to students**:

- Using smart boards are making it very easy for the students to understand. Many concepts can be explained to students using audio and video visuals making the students and teachers lives easy. It makes the classes very interesting.

15. **Online Assessment**:

- Online Assessments use digital media. Many exams are taken using Google Forms. This not only reduces the correction time but also enables the students to sit at home and give exams. Online assessment has become a boon for students and teachers.

16. **Improved access**:

- The 4G and 5G movement has enabled online education the many. So, digitalization in education has made it accessible to millions of students. Many certification courses are done online through digital mode.

17. **Global Reach**:

- Digital learning has improved global reach thus making education accessible for all through the globe. For example, there many certificate courses which can be done online.

Overall, digital education is revolutionizing how we learn, making it more inclusive, accessible, engaging, and efficient.

आधुनिक काल में हिन्दी एवं संस्कृत साहित्य का महत्व

Sri Raghunandan Hazam
H.O.D.
Dept. of Hindi
Sariya College, Suriya
Email. Id-rnhazam1967@gmail.com

भूमिका

संस्कृत भाषा और हिंदी साहित्य विश्व की समस्त भाषाओं में से एक प्राचीन भाषा है। हिंदी साहित्य का महत्व हिंदी, भारत की राजभाषा, संस्कृत भाषा से उत्पन्न होती है। चौंथी शताब्दी ईस्वी से हिंदी भाषा ब्राह्यी लिपि में लिखि गई थी, लेकिन 11वीं भाताब्दी ईस्वी से यह भाषा देवनागरी लिपि में लिखि गई है। हिंदी साहित्य कहानियाँ, कविताएं, नाटक और उपन्यास से भरी है। हिंदी साहित्य को चार एतिहासिक चरणों में विभाजित किया जा सकता है। आदिकाल (1400 ईस्वी से पहले), भक्तिकाल (1375–1700), रीतिकाल (1600–1900) और आधुनिक काल (1850 के पश्चात) और आधुनिक काल (1850 के पश्चात)। आदिकाल के वैदिक ग्रंथों व उपनिषदो से लेकर वर्तमान साहित्य में मनुश्य जीवन को सदैव ही प्रभावित किया है।

साहित्य किसी संस्कृति ज्ञान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उदाहरण के लिए भाक्तिकाल के साहित्य से हमें हिन्दूओं के धार्मिक परम्परों की जानकारी मिलती है। भारत अपने प्राचीन भाषा संस्कृत को दिवस के रूप में भी मनाता है जो की 07 अगस्त को पुरे विश्व तौर पर मनाया जाता है। जिस प्रकार देवता अमर है उसी प्रकार संस्कृत भाषा भी अपने विशाल–साहित्य, लोक हित की भावना, अनेक प्रयासों तथा नवीन–नवीन भाब्दों की निर्माण क्षमता आदि के द्वारा अमर है। किसी भी काल का अध्ययन से हम तत्कालिन मानव जीवन के रहन–सहन व अन्य गतिविधियों को आसानी से जान सकते है। साहित्य से हम अपने विरासत के बारे में जान सकते है। इस तरह भारतीय सभ्यता और मूल साहित्य में सुरक्षित है और वर्तमान पीढ़ी इनको पालन कर सकते है। हिंदी साहित्य द्वारा कबीर, तुलसी दास, प्रेमचंद्र और यशपाल जैसे कवि एवं लेखक के प्रतिभा दुनिया को दिखाया गया है। जब हमारा देश अंग्रेजी सत्ता का गुलाम था तब साहित्यकारों की लेखनी की ओजस्विता राष्ट्र के पूर्व गौरव और वर्तमान दुर्दशा पर केंद्रित थी। इस दृष्टि से साहित्य का महत्व वर्तमान में भी बना हुआ है। आज के साहित्यकार वर्तमान भारत की समस्याओं में पर्याप्त स्थान दे रहे है।

परिचय

संस्कृत भाषा आज भी करोड़ों मनुष्यों के जीवन से अनमोल है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक समस्त जनता के धार्मिक कृत संस्कृत में होते है। प्रातः जागरण से ही अपने ईष्टदेव को संस्कृत भाषा में स्मरण करते है। गर्भाधान से लेकर अन्त्सेष्टि पर्यन्त सोलह संस्कार संस्कृत में होते है। जैन और महायानी बौद्धों का समस्त विशाल साहित्य संस्कृत और प्राकृत में भी है। विचार – विस्तार, भाषण का माध्यम संस्कृत है। आज भी हजारों विद्धान नानाविध विषयों में साहित्य से इसकी गरिमा को निरन्तर बढ़ाकर अपनी और संस्कृत की महिमा से अलंकृत हो रहे है। अतः संस्कृत एक जीवन्त और सशक्त भाषा है। किसी भाषा को राष्ट्र भाषा बनने के लिए उसमें सर्वव्यापकता, प्रचुर साहित्य रचना, बनावट की दृष्टि से सरलता और वैज्ञानिकता, सब प्रकार भावों को प्रकट करने की सामर्थ आदि गुण होने अनिवार्य होते है। यह सभी गुण हिंदी भाषा में है। आज भी हिंदी देश के कोने–कोने में बोली जाती है। अहिंदी भाषा भी थोड़ी– बहुत और टूटी–फूटी हिंदी बोल और समझ सकता है। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली आदि राज्यो की यह राजभाषा है। पंजाब, गुजराज, महाराष्ट्र और अंड़मान निकोबार में इसे द्वितीय भाषा का दर्जा दिया गया है। देश प्रांतों में यदि कोई भाषा संपर्क के रूप में प्रयोग किया जा सकती है तो वह हिंदी ही हो सकती है। विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी का

पठन–पाठन हो रहा है। परन्तु आज अपने ही देश में हिंदी को तिरस्कृत होना पड़ रहा है। विदेशी मानसिकता के रोग से पीड़ित कुछ लोग भी अंग्रेजी क पक्षधर और हिंदी के विराधी बने हुए हैं।

हमारे देश में हिन्दी एवं संस्कृत साहित्य का महत्व :–

साहित्य समाज का दर्पण है। प्रत्येक युग में साहित्यकारों द्वारा साहित्य लिखा जाता रहा है। साहित्य की अनेक विधाएँ है जैसे– महाकाव्य, नाटक, खंडकाव्य, कहानी, विभिन्न विषयों से सम्बंधित मुक्तक आदि। इनमें महाकाव्य साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। महाकाव्यकार बिरले ही हुआ करते है। हर युग में हर देश में महाकाव्य लिखे गए है पर बहुत कम। भारत देश में महाकाव्यों का विषय अधिकत्तर श्री राम और कृष्णा रहे है। इन दोनों के युग में जो धटनाएँ धटी वे प्रत्येक युग की धटनाओं का कर्म और उसी रूप में किसी न किसी तरह प्रतिनिधित करती है। भारत देश श्री राम और श्री कृष्णा को नायक के रूप में लेकर हर युग में और हर भाषा में महाकाव्य लिखें गए है। संसार की समस्त प्राचीनतम् में से सस्कृत का सर्वोच्च स्थान है। विश्व साहित्य की प्रथम पुस्तक ऋग्वेद संस्कृत भाषा में ही रची गई है। संम्पूर्ण संस्कृति, परम्परा और महत्वपूर्ण राज्य इसमें निहित है। अमर भाषा या देववाणी संस्कृत को जाने बिना भारतीय संस्कृति महत्ता को जाना नहीं जा सकता है। संस्कृत भाषा से ही कोई भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति हुई है। दुसरे शब्दों में इसे भारतीय भाषाओं की मां माना गया है। देश–विदेश के कई बड़े–बड़े विद्वान संस्कृत भाषा के अनुपम और विपुल साहित्य को देख कर चकित रह गए है। कई विशेषज्ञों ने वैज्ञानिक रीति से इसका अध्ययन किया और गहरी विश्लेषण की है। समस्त भारतीय भाषाओं को जोड़ने वाली कड़ी यदि कोई भाषा है तो वह संस्कृत भाषा ही है।

भारतीय भाषाओं की जननी भाषा संस्कृत

संस्कृत को सभी उच्च भाषाओं की जननी माना गया है। इसका कारण है इसकी सर्वाधिक शुद्धता और इसलिए यह कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर के लिए उपयुक्त भाषा है मीठी और देवी संस्कृत भाषा का काव्य बहुत ही मीठा है एवं उससे भी अधिक मीठा, प्रभावशाली नैतिक शिक्षा देने वाला सुभाषित है। संस्कृत को देववाणी भी कहते है। इस दृष्टि से यह देवों के समान स्वातंत्र्य की भाषा है। यह बंधन काटने वाली दैवीय भाषा है। 1857 की क्रांति का अग्रदूत प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द संस्कृत का उद्‌भट विद्वान था। तिलक, लाला लाजपतराय, मालवीय पर भी संस्कृत की अमित छाप थी।

भारत की सारी भाषाएँ तो संस्कृत से ही निकली है किंतु जैसा पहले स्पष्ट किया जा चुका है संस्कृत का प्रभाव केवल भारत में ही नहीं विदेशी भाषाओं पर भी पड़ा है। फारसी, लैटिन, अंग्रेजी और श्रीलंका की भाषा, नेपाली एवं अफ्रीका के मूल निवासीयों की भाषा पर संस्कृत का प्रभाव है। पश्चिमी अमेरिका राज्य में एक जाति ऐसी है जो संस्कृत से मिलती–जुलती भाषा से अपने विवाह संस्कार करती है और वैसे ही भाषा बोलती है। इंडोनेशिय, मलेशिया एवं सिंगापुर की भाषाओं पर भी संस्कृत का प्रभाव है। महर्शि महेश योगी के द्वारा विदेशों में संस्कृत का बहुत अधिक प्रचार किया गया। साथ ही हरे कृष्णा मिशन द्वारा भी विदेशों में संस्कृत का गीता के माध्यम से प्रचार किया गया। महर्शि अरविन्द ने विश्व संस्कृत प्रतिष्ठान की स्थापना पाण्डिचेरी में की थी। गुलाम दस्तगीर मुसलमान होते हुये भी संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित है। वे सब जगह सरल संस्कृत भाषा में ही बोलते है। भारत में ऐसे कोई परिवार है जिन्होंने अपनी मातृभाषा संस्कृत लिखवायी है एवं वे धर में संस्कृत में बोलते है। पी. सी. रेन की इंग्लिश ग्रामर में एक वाक्य लिखा है ''कालिदास इज शेक्सपियर ऑफ इंडिया'' किंतु जब विदेशी विद्वानों गेटे तथा अन्य लोगों ने संस्कृत का अध्ययन कर कालिदास के काव्यों को पढ़ा तब वे सिमिली ऑफ कालिदास शेक्सपियर इज नथिड्ग। ''शेक्सपियर इज ऑन्ली ए ड्रेमेटिस्ट एण्ड कालिदास इज दी ग्रेटेस्ट पॉयट ऑफ दी वर्ल्ड़''।

दार्शनिक दृष्टि से

वेद, वेदांग, उपवेद आदि के अतिरिक्त संस्कृत वाक्य में दार्शनिक दृष्टि का वाक्य भी अत्यंत विशाल है। पूर्वमीमांसा उत्तर मीमांसा, संख्य, योग वैशविक और न्याय इन छह प्रमुख आस्तिक दर्शनों के अतिरिक्त पचासों से अधिक आस्तिक–नास्तिक दर्शनों के नाम तथा उनके वाक्य उपलब्ध है जिसमें आत्मा, परमात्मा, जीवन, जगत्पदार्थमीमांसा, तत्वमीमांसा आदि के सन्दर्भ में अत्यंत प्रौढ़ विचार हुआ है। आस्तिक भाड्‌दर्शनों के प्रवर्तक आचार्यों के रूप में व्यास, जैमिनी, कपिल, पतंजि, कणाद, गौतम आदि के नाम संस्कृत साहित्य में अन्तर है अन्य आस्तिक दर्शनों में भौश, वैष्णव, तांत्रिक आदि सैकडों दर्शन आते है। आस्तिकेतर दर्शनों

में बौद्धदर्शनों, जैनदर्शनों आदि के संस्कृत ग्रंथ बडे ही प्रौढ़ और मौलिक है। इनमें गंभिर विवेचन हुआ है तथा उनकी विपुल ग्रंथ राशि आज भी उपलब्ध है। चार्वाक, लोकायतिक, गार्हपत्य आदि नास्तिक दर्शनों का उल्लेख भी मिलता है। वेदप्रामण्य को माननेवाले आस्तिक और तदितर नास्तिक के आचार्यों और मुनिरिशियों ने अत्यंत प्रचुर मात्रा में दार्शनिक वाक्य का निर्माण किया है। दर्शन सूत्र के टीकाकार के रूप में शंकराचार्य का नाम संस्कृत साहित्य में अमर है।

<u>हिन्दी साहित्य में संस्कृत की महत्ता :–</u>

संस्कृत भाषा एक विश्वव्यापी भाषा हैं। पुनरपि भारत सरकार इस और कोई विषेश ध्यान नहीं दे रही, सरकार की ओर से संस्कृत भाषा को अधिक से अधिक प्रोत्साहन मिलना चाहिए। इसी प्रकार अमेरिका भी संस्कृत भाषा पर अटल है। ''अमेरिका कॉंग्रेस पुस्कालय'' में 67 सौ (छह हजार सात सौ) संस्कृत भाषा के हस्तलिखित ग्रंथ आज भी भारत के गौरव का गुणागान कर रहे है, और सारे जागत में प्रकाशित होने वाले संस्कृत साहित्य का सूचीपत्र भी आप वहाँ से प्राप्त कर सकते है। अभी लगभग तीस वर्ष की बात है कि उतर अमेरिका के दक्षिण भाग में अन्वेषण किया गया। वहाँ एक मनुष्य जाति मिली जो अपनी ही भाषा में बोलती थी। उनकी उस भाषा का नाम भाषा शास्त्रियों ने ब्रोकिन संस्कृत (टूटी–फूटी संस्कृत) रखा। यह धटना भी संस्कृत के महत्व का सिर ऊँचा करती है। केवल इतना ही नहीं अपितु रूस तथा अमेरिका के अतिरिक्त जर्मनी, अफगाानिस्तान, आईलैण्ड, सीलीन, हॉलैड, मिस्र, इटली, इंग्लैण्ड, चीन आदि देशों में भी संस्कृत के महत्व कोई कम नही है। विद्यालयों में भी अनिवार्य रूप अध्ययन–अध्यापन होना चाहिए। प्रत्येक भारतियों को भी अपनी भारतीय (संस्कृत भाषा) का अध्ययन अवश्य करना चाहिए और यतन करना चाहिए की निकट भाविष्य में भी संस्कृत भाषा राष्ट्रभाशा बने तभी हम भारत के भाषा संबंधी प्रान्तीयता आदि के कलह को दुर भागा सकते है और तभी हम संसार में सच्ची विश्व शांति की स्थापना कर सकते है।

मध्यकालीन भारत में धार्मिक आन्दोलनों का ऐतिहासिक तुलनात्मक अध्ययन

श्री कार्तिक प्रसाद यादव
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग,
सरिया कॉलेज, सरिया
गिरिडीह, झारखण्ड़
मो० न०–7004600677

भुमिका :

मध्यकालीन भारत में विविध धार्मिक, सांस्कृतिक एवं अध्यात्मिक गतिविधियों, घटनाओं परिघटना का सम्मिश्रण मिलता है। इसका एक प्रमुख कारण इस कालखण्ड में विभिन्न धार्मिक अध्यात्मिक अभियानों का अर्विभाव और विकास होना है जिसने कि कई नई–नई तथ्यों को उभारा और धार्मिक अध्यात्मिक विचारधारा में नई सोच एवं परिवर्तन के बयार चले, इस पूरे घटनाचक्र में एक ओर धार्मिक–अध्यात्मिक क्षेत्र में प्रभावकारी परिवर्तन हुए तो दूसरी ओर धार्मिक सुधारवादी अभियान भी व्यापक रूप से चले जिसने भारतीय धार्मिक एवं । सामाजिक जीवन पर व्यापक प्रभाव डाला।

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में विभिन्न धार्मिक संतो एवं धर्म सुधारकों का महत्वपूर्ण स्थान है जिन्होंने समाज में धार्मिक सुधार लाने के लिए महत्वपूर्ण आन्दोलन आरम्भ किया। इसके लिए इन्होनें कई प्रकार के धार्मिक 'अभियान चलाए जिसमें भक्ति मार्ग को विशेष बल दिया गया। इसे हम मध्यकालिन भारतीय इतिहास में भक्ति आंदोलन के नाम से जानते हैं। वास्तव में इस आन्दोलन को हम पारंपरिक भारतीय धार्मिक आन्दोलन के विस्तृत और परिष्कृत रूप कह सकते हैं क्योंकि भारत में विभिन्न कालखण्डों में इस प्रकार के धार्मिक आन्दोलन होते रहे हैं। विभिन्न इतिहासकारों ने भी इसे नया आन्दोलन नहीं माना है। यद्यपि मध्यकालीन भारतीय इतिहास में विभिन्न धार्मिक आन्दोलन एक महत्वपूर्ण अध्याय है जिसके स्त्रोत भारतीय धार्मिक परंपरा एवं विश्वास रहे हैं। मध्यकालीन भारतीय धार्मिक आन्दोलनों का प्रारभ दक्षिण भारत से माना जाता है।

जिसकी प्रेरणा स्त्रोत शंकराचार्य है। इस काल खण्ड में धार्मिक आन्दोलनों की आवश्यकता और प्रासंगिकता के कई कारण हो सकते हैं जिसका एक प्रमुख तत्कालिन कारण मध्यकाल में इस्लाम धर्मावलम्बी मुस्लिम धर्म प्रचारकों द्वारा अपने धर्म प्रचार के लिए हर प्रकार के प्रयत्न किया जाना था। इसलिए एक ओर हिन्दु भक्ति आन्दोलन ने इस्लाम के बढ़ते प्रभाव से बचने के लिए धर्म सुधार आन्दोलन प्रारंभ किया और धर्म व समाज में आयी कुरीतियों को अंत करने का प्रयास किया। इसी प्रकार मुस्लिम सुफी संतों ने भी इस काल में अपने मत के प्रचार एवं मान्यताओं के विस्तार के लिए बड़े पैमाने पर आन्दोलन किये। सुफी संतो की अपनी व्यापक विचारधारा थी जो इस्लाम धर्म के पैगम्बर मुहम्मद साहब, कुरान और इस्लामिक संहिताओं को मानते हुए भी, इनमें दूसरे धर्मों के विचारों, मतों एवं संदेशो के प्रति अंगीकार भाव भी मिलता है। मध्यकालीन भारत में सुफीवाद में ईसाई धर्म, पारसी धर्म, बौद्ध मत और भारतीय दर्शनों वेदांत और योग के विचारों और पंरपराओं का भी समावेश स्पष्ट रूप से परिलक्षित

होता है। सुफी संतवाद में भी कुछ दार्शनिक और सर्वमानवतावादी तत्व मिलते हैं। भक्ति विचार की भांति सुफी मत भी भक्ति द्वारा मनुष्य की आत्मा को ईश्वर में लीन करने में विश्वास रखता है। भक्ति मत के सुधारकों की तरह सुफी भी प्राचीन रीति–रिवाजों एवं अनावश्यक कर्म काण्डों में विश्वास नहीं रखते हैं। यद्यपि कट्टरपंथी मुसलमान नाचने और गाते– बजाने की मनाही करते हैं तथापि सुफी लोग ईश्वर के नाम की खुमारी परमानन्द की प्राप्ति के लिए इसे आवश्यक समझते हैं। सुफी मत और बौद्ध मत में, भी कुछ समानताएं हैं। अंहकार का त्याग, मानव की हित का निरंतर आभास, वैराग्य का जीवन, भिक्षा मांगने की प्रथा, धर्म स्थलों में निवास आदि के सिद्धांत ये प्रकट करते हैं कि उन पर बुद्ध के उपदेशों का प्रभाव था। संक्षेप में यह विषय वस्तु सामान्य रूप से सार्वभौमिक एवं सर्वकालिक रही है और विशेष रूप में आज के संदर्भ में यह विषयवस्तु प्रासंगिक, सामयिक और बहुउपयोगी है। साथ–साथ विषयनिष्ठ भी है। वैसे पुस्तक जिसके मदत्त से मैनें यह शोध प्रस्तावना तैयार किया हूँ वह निचे अवलोक्य है। सतीश चन्द्र वे पुस्तक मध्यकालीन भारत, राजनीति, समाज और संस्कृति के पृष्ठ– 181 से 192, 315, 316 पर मध्यकालीन धार्मिक विचार और विश्वास पर चर्चा किया गया है। रामधारी सिंह दिनकर द्वारा लिखित पुस्तक के तृतीय अध्याय प्रकरण – पाँच में इस्लाम का हिन्दुत्व पर प्रभाव, प्रकरण, छः में भक्ति– आदोंलन और इस्लाम तथा प्रकरण – आठ में सिक्स मत और हिदुत्व. गुरू और ग्रंथ, हिन्दुत्व और इस्लाम विषय पर चर्चा किया गया है। वी. एस. भार्गव के पुस्तक– मध्यकालीन भारतीय इतिहास के अध्याय 15 के पृष्ठ– 278 पर भक्ति आंदोलन, पृष्ठ 284–286 पर सुफी आंदोलन एवं पृश्ठ 287–288 पर सांस्कृतिक समन्वय के बारे में सक्षिप्त में लिखा गया है। एस. आर. शर्मा के पुस्तक भारत में मुस्लिम शासन के इतिहास के अध्याय– आठ के पृष्ठ–165 में एक पद में मध्यकालीन धार्मिक आंदोलनों के विषय में संक्षिप्त विवरण है। के. एलाुशन के पुस्तक– मध्यकालीन भारतीय संस्कृति और दयाल सिंह भाती के पुस्तक मध्यकालीन भारत में अतिसंक्षिप्त रूप् में कहीं कहीं चर्चा किया गया है। डॉ नगेन्द्र के पुस्तक हिन्दी साहित्य का इतिहास के अध्याय तीन में भक्ति आंदोलन अध्याय पाँच में वैष्णव भक्ति आंदोलन एवं अध्याय–8 में भक्तिकाल की उपलब्धियों के विषय में प्रकाश डाला गया है।

भारतीय परिवेश के संदर्भ में परम्पराओं और धार्मिक क्रियाकलापों का विशेष महत्व है। इसके मूल स्त्रोत भी धार्मिक ग्रंथ, पांरपरिक प्रचलित प्रथाएं और विविध व्यवहारिक क्रियाकलाप रही है। प्राचीन काल के धार्मिक पुस्तकों के अतिरिक्त धार्मिक स्थल, स्तुप, धार्मिक प्रथाएं, रीति रिवाज, विश्वास और मन्दिर इतिहास के स्त्रोत रहे हैं। इस काल में पुराणों, महाकाव्यों आदि में दी गई धार्मिक परम्पराओं के माध्यम से प्राप्त ज्ञान की सहायता से इतिहास लेखन किया गया है। भक्ति सुफी काल के इतिहास के स्त्रोत, परम्पराएं तथा संत कवि की रचनाएं है। इस काल के धर्म सुधारकों ने अपने विचारों को मौखिक रूप में प्रकट किया और कुछ संत– कवियों ने ऐसी क्षेत्रीय भाषाओं में विचार प्रकट किया जो साधारण लोग बोलते थे। इन भक्तों की रचनाएं रागों में गाई जाती थी। यह भी उल्लेखनीय है कि साधारणतः कवियों ने भक्ति विचाराकों के विचारों को उनकी मृत्यु के पश्चात् भी लिखा है। मध्यकालीन भारत में धार्मिक आंदोलनों के कई महत्वपूर्ण पक्ष है। पहला, समाज में व्यापक हो गई कुरीतियों एवं धार्मिक बाह्याडम्बर के विरूद्ध सुधारवादी अभियान, दूसरा भारतीय परिवेश में निर्गुण धारावादी विचारों, का व्यापक हस्तक्षेप, हो रहे परिवर्तन को दृष्टि में रखते हुए बदलावकारी परिस्थितियों का उत्पन्न होना। इन सभी

तथ्यों को दृष्टि में रखते हुए यदि हम अध्ययन करे तो पाते हैं कि मध्यकालीन भारतीय धार्मिक आंदोलनों का भारतीय इतिहास में एक युगान्ताकारी भूमिका है जिसने भारतीय समाज एवं धार्मिक परिदृश्य में अपना अमिट छाप छोड़ा है। वास्तव में मध्यकालीन भारतीय धार्मिक आन्दोलनों पर समग्र अध्ययन किया जाए तो अनेक तथ्य स्पष्ट होते है जो की बहुत ही प्रासंगिक एवं सामयिक प्रतीत होता है। आज भी हमारा भारतीय समाज परम्पराओं और विभिन्न विश्वासों के प्रति प्रतिबद्ध है और यह प्रतिबद्धता समाज पर व्यापक रूप से हावी है। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि आज की भारतीय धार्मिक परिस्थितियाँ प्राचीन धार्मिक मान्याताओं पर आधारित, मध्यकालीन धार्मिक सुधारों से प्रभावित और समावेशी धार्मिक रीति–रिवाजों से परिपूर्ण है। इतिहास लेखन में इन सभी बिन्दुओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय समाज पर अध्ययन करना हो तो किसी भी स्थिति में धार्मिक पहलू की उपेक्षा करना संभव नही है। भारतीय समाज के संदर्भ में तो यह और भी आवश्यक प्रतीत होता है कि विभिन्न धार्मिक विषयों, मतों, विचारों और विश्वासों पर गहरा और ऐतिहासिक अध्ययन किए जाए और इससे से बहुत अच्छे निष्कर्श भी आएंगे जो भारतीय समाज और इतिहास के विकराल स्वरूप को प्रकट रखेगा।

भारतीय समाज के धार्मिक इतिहास और रीति–रिवाज के विराट स्वरूप को समग्र एवं तथ्य परक रूप से अध्ययन करने की रूचि इतिहास के विद्यार्थी के रूप में अध्ययन काल से रही है। भारतीय इतिहास में धार्मिक विषयों पर अध्ययन कई रूप में होता रहा है। एक ओर धार्मिक संदर्भ स्वयं इतिहास के स्वरूप रहे हैं तो दूसरी ओर धार्मिक रीति–रिवाज, कर्मकाण्ड एवं विश्वास प्राचीन समय में ही विभिन्न रूपों में विद्यमान रहीं है। कालान्तर में भारतीय धार्मिक स्वरूप में बदलाव और सुधार भी हुएऔर इन सुधारों के पश्चात् हुए परिणामों का स्वरूप आज भी हमारे सामने विद्यमान है। भारतीय धार्मिक इतिहास एवं विभिन्न कालखण्डों में सुधारवादी आन्दोलन के आर्विभाव, विकास, स्वरूप एवं विविध पारंपरिक रूपों के संदर्भ में अध्ययन–मनन की जिज्ञासा सदा ही रही है। इस संदर्भ में कई प्रकार की परिकल्पना भी होती रही है कि प्राचीन समय में भारत में धार्मिक परम्परा सशक्त रही है और दूसरे विविध स्वरूप रहे हैं। विभिन्न कालखण्डों में विभिन्न बदलाव, परिवर्तवादी अभियान, धार्मिक सुधार एवं बाहरी हस्तक्षेप द्वारा धर्म क्षेत्र में कई नई विकास की प्रकिया, ये सभी परिकल्पना के बिन्दु रहे हैं। यही नहीं भारतीय धार्मिक परिस्थितियाँ किस प्रकार से पूरे विश्व की धार्मिक परिदृश्य में अपना प्रभाव डालती रही है एवं धार्मिक जगत में विश्वगुरू के रूप में भारतीय धार्मिक सांस्कृतिक अध्यात्मिक इतिहास नेतृत्तकर्ता की भुमिका में रहा है जो आज भी किसी न किसी रूप में अनवरत् जारी है। भारतीय धार्मिक पृष्ठभूमि में मध्यकालीन भारतीय धार्मिक आन्दोलनों के संदर्भ में सामाजिक सांस्कृतिक, अध्यात्मिक इतिहास के विभिन्न बिन्दुओं पर विवेचना एवं ऐतिहासिक पहलूओं पर अध्ययन की परिकल्पना ही इस विषयवस्तु का आधार है। निश्चित रूप से उपर वर्णित सभी तथ्यों पर एक शोधात्मक दस्तावेज तैयार होगा जो मध्यकालीन भारत है। इस शोध विषय से संबंधित अनुसंधानिक विषय का क्षेत्र सामान्य रूप से भारतीय धार्मिक एतिहासिक पृष्ठभूमि, उद्‌भव और विकास के विभिन्न पक्ष एवं प्रभावकारी तत्वों का अध्ययन एवं विशेष रूप से मध्यकालीन भारतीय धार्मिक आन्दोलनों का ऐतिहासिक तुलनात्मक अध्ययन होगा। मध्यकालीन भारत धार्मिक आंदोलनों से प्रभावित क्षेत्र एवं अवाम, सम्प्रदाय इसमें समाहित होगा।

कन्या भ्रूण हत्या

एक सामाजिक चिंतन

श्री अरूण कुमार
विभागाध्यक्ष,
अर्थशास्त्र विभाग
सरिया महाविद्यालय, सरिया

प्रकृति ने स्त्री व पुरुष को समभाव से धरती पर विकसित किया। आरम्भ में मानव ने भी अपने प्रयासों से विकास के पायदान में मीलों का सफर तय करके वर्तमान में विज्ञान और तकनीकी की बुलन्दियों को छुआ है। ये सभी प्रयास मानव ने अपने जीवन की उत्तरजीविका तथा गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए किए हैं। परन्तु अज्ञानतावश विकास की प्रक्रिया के दौरान स्वयं की गतिविधियों से अपने ही भविष्य को खतरे में डाल रहा है। इसके ज्वलंत उदाहरण पर्यावरणीय समस्या अथवा प्रदूषण, जनसंख्या वृद्धि, लिंग विभेद आदि कई ऐसे खतरे हैं जो मानव जीवन के भविष्य के लिए एक प्रश्न चिन्ह हैं।

यदि हम भारत के संदर्भ में विचार करें तो यहां की संस्कृति में आदिकाल से ही नारी की स्थिति पूजनीय है तथा उसे देवी स्वरूप माना जाता है। परन्तु पाश्चात्य देशों के अनुकरण, आधुनिकीकरण के कारण वर्तमान भारत में स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। हमारे समाज में अभी भी कई ऐसी परम्पराएं विद्यमान हैं जिनके द्वारा किसी स्त्री के सन्तान न हो तो उसे समाज में स्त्री का दर्जा नहीं मिलता। यदि कोई स्त्री बेटी पैदा करती है तो उसे अधूरा माना जाता है इसके विपरीत यदि कोई स्त्री पुत्र पैदा करती है तो उसका कद समाज में ऊंचा हो जाता है। आज भी यदि कोई स्त्री संत, महात्मा, ऋषि–मुनि या पुजारी के पास आशीर्वाद लेने जाती है तो उसे जो आशीर्वाद मिलता है वह है ''पुत्रवती भव'' ना कि पुत्रीवती भव । आज भी समाज में यह धारणा है कि स्त्री को मोक्ष पाने के लिए दूसरा जन्म लेना पड़ता है जबकि पुरुष को मोक्ष की तभी प्राप्ति होती है जब उसका बेटा उसे मुखाग्नि दे।

समाज में स्त्री–पुरुष को लेकर भेदभाव की प्रक्रिया गर्भावस्था से हीलिंग विभेद को अनुभव के द्वारा जानने का प्रयास करते थे। आज भी भारत के कुछ आदिम समाज में परम्परागत विधियों से गर्भपात के तरीकों का प्रामाणिक अध्ययन किया गया है। उदाहरणतः परम्परागत भारतीय समाज में आज भी यह मान्यता है कि यदि गर्भवती महिला के पेट में दाईं तरफ हलचल है तो उसके पुत्र तथा बाईं तरफ हलचल है तो उसके पुत्री पैदा करने की सम्भावना रहती है। इस आधार पर बच्चे को जन्म देता है या नहीं, इस विषय पर भी विचार किया जाता है। इस प्रकार पता चलता है कि गर्भपात को प्रभावित करने वाले कारक बहुविषयक है। जिनमें सास की भूमिका, मां की भूमिका, पति की भूमिका, घर की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, समाज – विशेष की मान्यताएं प्रमुख हैं। इन सबके आधार पर किसी एक व्यक्ति को जिम्मेदार ठहराना अनुचित है। क्योंकि एक स्त्री अपने शरीर के महत्वपूर्ण हिस्से को अथवा अपने गर्भ में पल रहे शिशु को नष्ट करने में शारीरिक, मानसिक दबाव के दौर से गुजरती है। अतः यह प्रक्रिया किसी भी सामान्य नारी के लिए अत्यन्त दुःखदायी है। प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने 23 अगस्त को एक भाषण में कहा था ''नारी उत्थान उनके

मनुष्य में लिंग निर्धारण

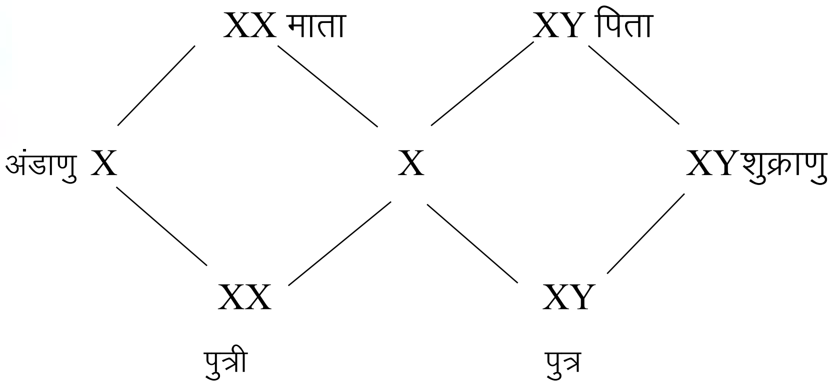

जन्म से पहले से ही शुरू करना होगा और यह कराई स्वीकार नहीं है कि किसी बेटी की भ्रुण हत्या कराया जाए।''

महिलाओं में महीने के दौरान सामान्यतया एक अंडाणु निकलता है जिसमें X गुणसूत्र पाया जाता है जबकि पुरुषों में दो तरह के शुक्राणु बनते हैं जिनमें X तथा Y गुणसूत्र अलग–अलग शुक्राणुओं में पाए जाते हैं। जब X गुणसूत्र वाला शुक्राणु अंडाणु से निषेचित करता है तो इससे कन्या का जन्म होता है जबकि Y गुणसूत्र वाला शुक्राणु अंडाणु से निषेचन करता है तो पुत्र पैदा होता है। सामान्यतया लड़के तथा लड़कियों का अनुपात समाज में बराबर होता है। यदि किसी परिवार में लड़कियों की संख्या ज्यादा है तो अन्यत्र किसी दूसरे परिवार में लड़कों की संख्या ज्यादा होती है। इस प्रकार प्रकृति लड़के तथा लड़कियों का अनुपात निर्धारित करती है। लेकिन विज्ञान तथा तकनीकी विकास हो जाने के कारण मनुष्य लिंग निर्धारण की प्रक्रिया को अल्ट्रासोनोग्राफी की सहायता से गर्भावस्था में ही जान लेता है। अल्ट्रासोनोग्राफी सबसे आसान, सस्ती तथा अधिकांश जगह उपलब्ध तकनीक होने से आज यह आम लोगों की पसन्द बन गई है। इस तरह यदि गर्भ में कन्या पल रही होती है तो उसका गर्भपात करवा दिया

तालिका –01:– राज्यवार स्त्री–पुरूष अनुपात

क्र.सं	राज्य / केन्द्रशासित क्षेत्र	लिंगानुपात (प्रति हजार पुरूष पर महिलाएं)
1	केरल	1084
2	पांडिचेरी	1038
3	छत्तीसगढ़	991
4	तमिलनाडु	995
5	मणिपुर	997
6	आंध्रप्रदेश	992
7	उड़ीसा	978
8	मेधालय	986
9	हिमाचल प्रदेश	974
10	कर्नाटक	968
11	उत्तरांचल	963
12	गोआ	968
13	लक्षद्वीप	946
14	त्रिपुरा	961
15	झारखण्ड़	947

16	मिजोरम	975
17	असम	954
18	पश्चिम बंगाल	947
19	महाराष्ट	925
20	राजस्थान	928
21	गुजरात	918
22	मध्यप्रदेश	930
23	बिहार	916
24	नागालैण्ड़	931
25	उत्तरप्रदेश	908
26	अरूणाचल प्रदेश	920
27	जम्मू–कश्मीर	883
28	पंजाब	893
29	सिक्किम	889
30	हरियाणा	877
31	अंडमान–निकोबार द्वीप समुह	878
32	दिल्ली	866
33	दादर–नगर हवेली	775
34	चंडीगढ़	818
35	दमन एवं द्वीप	618

जाता है। पहली जनगणना में प्रति हजार पुरुष पर स्त्रियों की संख्या 972 थी, जो वर्ष 2001 जनगणना में घटकर 933 हो गई। गर्भ में लिंग जांच पर रोक लगाने वाले कानून का संशोधित रूप पीसीपीएनडीटी 2002, 14 फरवरी 2003 को देशभर में लागू हो गया है। अधिनियम के उल्लंघन पर दोषी को पांच साल की जेल और एक लाख जुर्माने का प्रावधान है। देश के अपेक्षाकृत समृद्ध पश्चिमी राज्यों – पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात में जहां आर्थिक विकासदर, साक्षरतादर, आदि पूर्वी राज्यों की तुलना में अधिक है पिछली दो जनगणनाओं के मुकाबले लिंग अनुपात में भारी गिरावट आई है, जबकि बिहार, उत्तर प्रदेश पश्चिमी बंगाल, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक आदि राज्य जो सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत कम समृद्ध है पिछली दो जनगणनाओं के मुकाबले कम गिरावट आई है। इसका ज्वलन्त उदाहरण भारत के कई राज्यों जैसेः हरियाणा, पंजाब, यू.पी., बिहार में लड़कियों की घटती हुई संख्या है जैसा कि तालिका में दर्शाया गया है।

भारत में तेजी से गिरते हुए लिंग अनुपात के पीछे कई धारणाएं जैसे कि यदि लड़की पैदा होती है तो वह घर के छप्पर को भी ले जाती है। विवाह में होने वाला खर्च, दहेज देना, शादी के बाद समय–समय पर ससुराल वालों द्वारा पैसे की मांग आदि समाज में फैली ये प्रथाएं लोगों को बेटी के बजाए बेटा पैदा करने के लिए प्रेरित करती हैं। अगर धीरे–धीरे यही सिलसिला चलता रहा तो प्रकृति द्वारा प्रदत्त मनुष्य के लिंग निर्धारण में असन्तुलन आ जाएगा और इसका परिणाम यह होगा कि मानव–जीवन का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा और यह विलुप्त होती नारियां सरकार एवं समाज के लिए चुनौती बन जाएंगी।

तालिका –2 स्त्री–पुरूष अनुपात

जनगणना वर्ष	स्त्री–पुरूष अनुपात (प्रति हजार पुरूषों पर महिलाएं)
1901	972
1911	964
1921	955
1931	950
1941	945
1951	946
1961	941
1971	930
1981	934
1991	927
2001	933
2011	943
2021	945

समाज में फैली हुई यह धारणा कि लड़की या लड़के का पैदा होना मां पर निर्भर करता है, गलत है। यदि हम इतिहास के पन्नों को उठाकर देखें तो हमे कई ऐसे उदाहरण मिल जाएंगे जिनमें यदि किसी परिवार मे निरन्तर कन्याएं पैदा हो रही थीं तो वह राजा किसी दूसरी स्त्री से विवाह इसलिए करता था कि उसे अपना उत्तराधिकारी मिल सके। लेकिन आज विज्ञान तथा तकनीकी विकास ने यह साबित कर दिया है कि लड़की या लड़के का पैदा होना उसके पिता पर निर्भर करता है, मां पर नहीं । आधुनिक समाज में ऐसी कुरीतियां अभी भी व्याप्त हैं जिनमें कन्या के पैदा होने पर परिवार के लोग खुश नहीं होते। उसके पालन–पोषण में पुत्र जैसा व्यवहार नहीं किया जाता और इस तरह परिवार में जन्मी, पली–बढ़ी कन्या शारीरिक तथा मानसिक तौर पर कमजोर हो जाती है।

अतः यदि हम अपने देश के विकास के प्रति चिन्तित हैं तो सर्वप्रथम हमें समाज में लड़कियों के गिरते हुए अनुपात तथा उनके साथ किए जा रहे भेदभाव पर चिन्तन करना चाहिए। यह एक जघन्य अपराध है। समाज के सभी वर्गों को मिलजुल कर इस बीमारी का निराकरण करना चाहिए। चिकित्सक समुदाय को जागृत कर हमें इस मुहिम को सफल बनाने में अपना योगदान देना होगा। लड़की को समान भाव से समाज में स्थान दिलाना चाहिए तथा वो सारी सुविधाएं जो पुत्र को समाज मे दी जाती हैं, पुत्री को भी मुहैया करानी चाहिए । अन्त में यही कहा जा सकता है कि गर्भस्थ शिशु को मारने में प्रथा पूरे भारतीय समाज के लिए अभिशाप है, इस अविलम्ब बन्द किए जाने की आवश्यकता है।

झारखंड राज्य की राजनीति में महिलाओं की भूमिका

श्री अरुण कुमार,
विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान,
सरिया कॉलेज सरिया, गिरिडीह; (झारखंड)
arunsuriya20@gmail.com
Mob 9304399684

भूमिका

झारखंड राज्य के राजनीति में महिला भागीदारी में तीव्र गति से वृद्धि हुई है। राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी ने उनकी चुनौतियां एवं मुद्दों के समाधान करने के लिए यह महिलाएं सक्षम बनी है। जिससे समाज में महिला और पुरुषों के बीच व्याप्त भेदभाव में कमी आई है। राज्य की प्रगति में महिलाएं भी अपनी सराहनीय भूमिका निभा रही है। महिलाएं राजनीतिक भागीदारी में बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रही है। इसके लिए आवश्यक कौशल एवं क्षमता निर्माण का विकास हुआ है। आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र में भी ये महिलाएं पहले की अपेक्षा सशक्त हुई हैं।

राज्य स्थापना के पश्चात विधानसभा चुनाव तथा आम चुनाव में भी महिला प्रत्याशियों का चुनाव जीतने का प्रतिशत में हमेशा वृद्धि हुई है। राज्य सरकार हो या केंद्र सरकार इन दोनों सरकारों में महिला जनप्रतिनिधि कैबिनेट मंत्री के रूप में भी अपनी भूमिका निभा चुकी है। महिला सशक्तिकरण में पंचायती राज व्यवस्था के तहत महिला आरक्षण का महत्वपूर्ण योगदान है। जिसके कारण आज स्थानीय स्वशासन के चुनाव में पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं अधिक सीट पर चुनाव जीतने में सफल रही है।

मुख्य शब्द -**राजनीतिक भागीदारी, सशक्तिकरण, महिला आरक्षण, राज्य के राजनीति**|

राज्य की राजनीति हो या देश की राजनीति। दोनों में महिला-पुरूषों का बराबर की भागीदारी होनी चाहिए। लोकतंत्र की मजबूती के लिए इन दो वर्गों का समर्थन प्राप्त करना आवश्यक है। लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में महिला एवं पुरुष दोनों वर्गों के मतों का महत्व एक बराबर होता है । राजनीति दृष्टिकोण से यहां के नारियों का विशेष योगदान रहा । किसी भी क्षेत्र में हमेशा पुरुष के सामान्य कार्य करने की क्षमता रखता है, किंतु पुरुष के अहम और समाज में अपने प्रधानता के कारण महिलाओं को पुरुष वर्ग के द्वारा दूसरे दर्जे की श्रेणी का मानता है। लेकिन समय के साथ महिलाओं के दायित्वों व भूमिकाओं में भी परिवर्तन हुआ है।कभी घर की चारदीवारी में बंद रहने वाली महिलाएं अब धीरे-धीरे घर से बाहर निकाल कर राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से पुरुषों के साथ मिलकर कार्य कर रही है। जिसके परिणाम स्वरूप झारखंड के राजनीति में महिलाओं की भागीदारी निरंतर बढ़ रही है। 81 विधानसभा वाले एक सदनीय विधान मंडल में निरंतर महिला विधायकों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। झारखंड राज्य की स्थापना 15 नवंबर 2000 ई को बिहार प्रांत के लगभग 46% हिस्से को काटकर बनाया गया । जो भारत का 28 वें राज्य के रूप में भारत के मानचित्र में उभर कर सामने आया। झारखंड की महिलाओं की सामाजिक व राजनीतिक स्थिति बेहतर नहीं थी । राज्य के राजनीति में महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा अत्यंत कम भागीदारी प्राप्त थी । मतदान का प्रतिशत एवं महिलाओं की भागीदारी वोट देने से लेकर प्रत्याशी बनने तक पुरुषों की अपेक्षा काफी कम रही ।

झारखंड के समाज में एक ऐसी वर्ग का निर्माण करती है। जो परंपरागत रूप से प्रताड़ना, उपेक्षा एवं पिछड़ेपन का शिकार रही है । जब संविधान की प्राथमिकताओं के अनुरूप समाज के कमजोर वर्गों को ऊपर उठाने की बात आती है, तो महिला वर्ग इसमें प्रमुख है । जंगलों में निवास करने वाले आदिवासी समुदाय की महिलाएं व ग्रामीण महिलाएं सामाजिक रूढ़ियों, परंपरागत रूप से विद्यमान सामाजिक-आर्थिक असमानतापूर्ण तथा शोषण की सामाजिक स्थिति तथा उसकी स्वतंत्रता की प्रतिबंधित करने वाले परिस्थितियों तथा अशिक्षा को समाप्त किए हुए राजनीतिक अधिकार को स्वतंत्र रूप से प्रयोग तथा राजनीतिक प्रक्रियाओं को विभिन्न चरणों में उनकी सार्थक भागीदारी की कल्पना करना कोरी साबित हुई ।

महिलाओं को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखे बिना तथा संवैधानिक प्रावधानों के तहत अपने हक और अधिकार के प्रति जागरूक होने के पश्चात राज्य के राजनीतिक में महिलाओं को सम्मानजनक स्थिति प्राप्त हो रही है । महिला सशक्तिकरण के प्रयास की वजह से महिलाएं आत्मनिर्भरता एवं vkRelEeku प्राप्त करने में सफल हुई है । भारतीय संविधान के संवैधानिक प्रावधान के तहत महिला और पुरुष को एक बराबर अधिकार मिलने तथा अपने हक और अधिकार के प्रति जागरूक होने के वजह से महिलाओं का राजनीतिक में सहभागिता काफी बढी है। लोकतंत्र की सफलता जन सहभागिता पर निर्भर करती है। जन सहभागिता की प्रकृति बहुमुखी होती है। जनता राजनीतिक प्रक्रियाओं में अपनी भागीदारी निभाती है।

लोकतंत्र में जनता कि सहभागिता तभी सार्थक होती है जब जनता लोकतांत्रिक प्रक्रिया के औपचारिक चरणों का निर्धारण करते हैं। अर्थात मतदान में भाग लेने, राजनीतिक क्रियाकलाप में अपनी भागीदारी निभाने ,दूसरे लोगों को वोट देने के लिए प्रेरित करने, राजनीतिक प्रचार, राजनीतिक दल की सक्रिय सदस्यता ग्रहण करना ,राजनीतिक दल के चुनावी रणनीति में भागीदारी निभाने ,राजनीतिक गतिविधियों के लिए चंदा इकट्ठा करना, चुनाव में उम्मीदवारी पेश करना ,दलीय प्रणाली में नेतृत्व का पद ग्रहण करना, राजनीतिक दल के सभाओं, प्रदर्शनों व रैलियां में शामिल होना ,राजनीतिक नेताओं से संपर्क रखना ,राजनीतिक दल को वित्तीय सहयोग देना आदि शामिल हैं। राज्य की स्थापना के पश्चात संपन्न विधानसभा के चुनाव के आंकड़े पर नजर डाला जाए तो महिलाओं का प्रतिनिधित्व विधानसभा में अलग-अलग समय में अलग-अलग स्थिति देखने को मिलता है। राज्य स्थापना के समय कुल 81 विधानसभा सीटों में केवल चार महिलाएं विधायक थी। कोडरमा विधानसभा से अन्नपूर्णा देवी, मनोहरपुर से जोबा मांझी, खिजरी विधानसभा से सावना लकड़ा और पोटका विधानसभा से मेनका सरदार चुनाव जीतने में सफल रहे थी।

झारखंड राज्य अलग होने के बाद पहली बार 2005 में झारखंड विधानसभा का चुनाव हुआ।जिसमें कुल चार महिलाएं ही चुनाव जीतने में कामयाब रही। लिट्टीपाड़ा से सुशीला हांसदा, कोडरमा से अन्नपूर्णा देवी ,निरसा से अपर्णा सेन तथा मनोहरपुर से जोबा मांझी चुनाव जीती। झारखंड राज्य के दूसरे विधानसभा चुनाव 2009 में संपन्न हुआ जिसमें कुल 8 महिला विधायक बनने में सफल रही झरिया से कुंती देवी , खिजरी से सावना लकड़ा, जगन्नाथपुर से गीता कोड़ा ,जामा से सीता सोरेन,सिसई से गीता श्री उरांव ,कोडरमा से अन्नपूर्णा देवी, सिमडेगा से विमला प्रधान तथा छतरपुर विधानसभा से सुधा चौधरी चुनाव जीती तथा विधानसभा में अपनी सक्रिय राजनीतिक सहभागिता निभाई।

झारखंड राज्य के निर्माण के बाद संपन्न तीसरी विधानसभा चुनाव 2014 में हुआ। इस चुनाव में 8 महिलाएं विधानसभा से निर्वाचित होने में सफल रहे। जिसमें दुमका से लुईस मरांडी, जामा से सीता सोरेन ,कोडरमा नीरा

यादव, बड़कागांव निर्मला देवी, जगन्नाथपुर गीता कोड़ा, मनोहरपुर जोबा मांझी ,मांडर गंगोत्री कुजूर तथा सिमडेगा से विमला प्रधान शामिल थी।

2019 में झारखंड विधानसभा का चुनाव संपन्न हुआ।इस चुनाव में सबसे अधिक बारह महिलाएं विधायक चुनाव जीतने में कामयाब रही। जामा विधानसभा से सीता सोरेन, महगामा से दीपिका सिंह पांडेय,कोडरमा से डॉ नीरा यादव ,बड़कागांव से अंबा प्रसाद, डुमरी उपचुनाव से बेबी देवी, निरसा से अपर्णा सेनगुप्ता ,झरिया पूर्णिमा नीरज सिंह ,ईचागढ़ सविता महतो ,मनोहरपुर जोबा मांझी, रामगढ़ उपचुनाव सुनीता चौधरी, गांडेय उप चुनाव में कल्पना सोरेन, मांडर उपचुनाव में नेहा शिल्पा तिर्की जीती है। झारखंड के राजनीतिक में यह पहला अवसर है जिसमें एकसदनीय विधानसभा में कुल बारह महिलाएं चुनाव जीतकर एक रिकॉर्ड स्थापित किया है। हालांकि महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम सीट जीत पाती है। जो राज्य के राजनीति में महिलाओं की कम भागीदारी को दर्शाता है।

झारखंड की राजनीति में अब महिला पुरुषों से पीछे नहीं है। झारखंड राज्य के गठन के बाद से ही महिलाओं की भागीदारी बढ़ती ही जा रही है। राज्य में पंचायती राज की स्थापना के बाद तथा महिलाओं के लिए स्थानीय स्वशासन में 50% सीट आरक्षित करने के बाद झारखंड की महिलाएं राजनीतिक रूप से अधिक सशक्त हुई है। वार्ड सदस्य से लेकर सबसे सर्वोच्च पद जिला परिषद अध्यक्ष तक महिलाएं अब चुनकर आ रही है यह महिलाएं राजनीतिक गतिविधियों में अब सक्रिय रूप से अपने भूमिका निभाने के लिए तैयार भी हो चुकी है। ग्राम पंचायत के वार्ड सदस्य से लेकर स्थानीय स्वशासन के सबसे सर्वोच्च पद जिला परिषद अध्यक्ष के पद पर महिलाएं आरक्षण के पश्चात महिलाएं आसीन होने में कामयाब हुई है। ये महिलाएं अब अपने लोकप्रियता एवं कार्य के आधार पर लोकसभा और विधानसभा के चुनाव में भी अपने भाग्य को आजमाने के लिए तैयार है। कई महिलाएं अब सक्रिय राजनीति का हिस्सा बन चुकी है।वहीं नगरीय निकाय के चुनाव में भी महिलाओं की सहभागिता काफी बढ़ी है। नगर निगम का चुनाव हो या नगर पालिका का।महिलाओं का प्रतिनिधित्व हरेक जगह पहले की अपेक्षा काफी बढा है। चुनाव में मतदान करने वालों में महिलाओं का प्रतिशत पुरुषों की अपेक्षा अधिक है। आंकड़ों के अनुसार अब तक सात महिला बिधायको ने मंत्री पद की शपथ ले चुकी हैं।जिसमें अन्नपूर्णा देवी, लुईस मरांडी, गीताश्री उरांव, नीरा यादव, जोबा मांझी, अपर्णा सेन और बेबी देवी शामिल हैंA

मधुकोड़ा के 2006 से 2008 की सरकार में जोबा माझी और अर्पणा सेन को मंत्री पद मिला था।वहीं रघुवर दास की सरकार में नीरा यादव और लुईस मरांडी को मंत्री पद दिया गया था. 2013 में हेमंत सोरेन सरकार में अन्नपूर्णा देवी और गीताश्री उरांव मंत्री बनी थी। 2019 में गठित हेमंत सोरेन की सरकार में महिलाओं दो कैबिनेट में शामिल किया गया जिसमें जोबा माझी और बेबी देवी शामिल है। झारखंड विधानसभा में आधी आबादी का प्रतिनिधित्व अब बढ़ता दिखाई दे रहा है. मांडर उपचुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी शिल्पा नेहा तिर्की की जीत व गांडेय उपचुनाव मे कल्पना सोरेन के जीतने के साथ ही विधानसभा में महिला विधायकों की संख्या बढ़कर 12 हो गई है,जो कि कुल संख्या का 13 प्रतिशत से अधिक है। राज्य गठन के बाद यह अब तक का सर्वाधिक आंकड़ा है. विधानसभा में कांग्रेस के महिला विधायकों की संख्या सर्वाधिक पांच हो गई है।

दीपिका पांडेय सिंह, ममता देवी, पूर्णिमा नीरज सिंह, अंबा प्रसाद के बाद अब शिल्पा नेहा तिर्की ने महिलाओं की संख्या में इजाफा किया है। झारखंड विधानसभा में झामुमो महिला विधायकों की संख्या तीन है। मंत्री जोबा मांझी के अलावे सीता सोरेन और सविता महतो हालांकि लोकसभा चुनाव के समय सीता सोरेन ने झारखंड मुक्ति मोर्चा

छोड़कर बीजेपी पार्टी का दामन थाम लिया तथा दुमका लोकसभा से अपना भाग्य अजमाई।, विपक्षी दल बीजेपी के महिला विधायकों की संख्या भी तीन है।नीरा यादव, अपर्णा सेन गुप्ता और पुष्पा देवी सदन में महिलाओं का प्रतिनिधित्व पार्टी की ओर से करती हैं। वही झारखंड के संसदीय चुनाव में धनबाद संसदीय क्षेत्र से प्रो रीता वर्मा चार बार लोकसभा चुनाव जीती है ,पूर्व एसपी रणधीर प्रसाद वर्मा की धर्मपत्नी वर्ष 1991 से 2004 तक धनबाद से लगातार सर्वाधिक चार बार सांसद निर्वाचित हुई। जमशेदपुर संसदीय क्षेत्र से राज्य स्थापना के समय आभा महतो जबकि 2007 में हुए लोकसभा उपचुनाव में सुनील महतो की हत्या के बाद उसकी पत्नी सुमन महतो यहां की सांसद चुनी गई।वहीं कोडरमा संसदीय क्षेत्र से अन्नपूर्णा देवी लगातार दो बार चुनाव जीतने में सफल रही है तथा झारखंड की पहली महिला केंद्रीय कैबिनेट में अपना जगह बनाने में सफल रही है। 2019 के लोकसभा में कोडरमा से महिला सांसद के रूप में चुनी गई। अन्नपूर्णा देवी को केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री बनाया गया। वहीं 2024 में पुन: चुनाव जीतने पर केंद्रीय महिला एवं बाल विकास विभाग सौपा गया है। झारखंड में कुल 14 लोकसभा सीट है।जिसमें पांच जनजातियों के लिए आरक्षित है जबकि एक अनुसूचित जाति के लिए सीट आरक्षित है। सिंहभूम संसदीय क्षेत्र से कांग्रेस पार्टी से गीता कोड़ा 2019 में जीत हासिल की थी। वहीं संसदीय क्षेत्र में 2024 में जोबा माझी सांसद बनने में सफल रही।

एकीकृत बिहार राज्य में झारखंड क्षेत्र से कार्तिक उरांव की पत्नी सुमति उरांव दो बार चुनाव जीती और केंद्र सरकार में मंत्री बनी।वहीं रामगढ़ राजघराने की ललिता राजलक्ष्मी हजारीबाग, धनबाद और औरंगाबाद से लोकसभा का प्रतिनिधित्व की। पलामू लोकसभा क्षेत्र से सर्वाधिक चार बार चुनाव जीतने का रिकॉर्ड कमला कुमारी को प्राप्त है। वही खूंटी संसदीय क्षेत्र से सुशीला केरकेट्टा भी चुनाव जीतने में सफल रही थी। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि राज्य के राजनीति में महिलाओं की भूमिका राज्य स्थापना के पूर्व और बाद दोनों कालो में रहा है।

निष्कर्ष - झारखंड राज्य की स्थापना के बाद झारखंड के राजनीति में महिलाओं की स्थिति मिली जुली रही है, लेकिन स्थापना काल से लेकर अब तक राज्य के विधानसभा में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की संख्या में वृद्धि हुई है। सबसे अधिक महिलाएं वर्तमान समय में निर्वाचित होकर विधानसभा में पहुंचने में सफल रही है। झारखंड स्थापना के बाद अगर लोकसभा की बात की जाए तो चार संसदीय क्षेत्र धनबाद] कोडरमा, जमशेदपुर, और सिंहभूम संसदीय क्षेत्र से महिलाएं प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। जिसमें सबसे लंबे समय तक धनबाद संसदीय क्षेत्र से प्रो रीता वर्मा शामिल है। केंद्र की राजनीति में कोडरमा संसदीय क्षेत्र की सांसद श्रीमती अन्नपूर्णा देवी शिक्षा राज्य मंत्री एवं केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री पर आसीन होकर अपनी सराहनीय भूमिका निभा रही है। इससे यह स्पष्ट होता है झारखंड की महिलाएं राजनीतिक में अपनी भागीदारी व सहभागिता बढ़ाने में सफल रही है किंतु सीटों की संख्या के आधार पर इसका प्रतिनिधित्व आज भी कम है। स्थानीय स्वशासन में 50% महिलाओं का सीट आरक्षित करने के बाद महिला प्रतिनिधित्व की संख्या में काफी इजाफा हुआ है। झारखंड की महिलाएं पहले की अपेक्षा राजनीतिक रूप से अधिक सशक्त हुई है तथा राजनीतिक गतिविधियों में अपनी सकारात्मक भागीदारी निभा रही है।

A STUDY OF RUSTIC LIFE ASPECTS IN SELECTED POEMS OF SITAKANT MAHAPATRA AND JAYANT MAHAPATRA

Sri Rabindra Kumar Mishra
H.O.D.
Sariya College, Suriya
Giridih, Jharkhand
Pin- 825320

Introduction: -

Odisha is a unique state. Odia is spoken in Odisha. It is an Indo-Aryan Language. It is the official language of Odisha and it is also spoken in some parts of Jharkhand, Chattisgarh and West Bengal. It is a constitutionally recognized language of India. It is a classical language on basis of having a long literary history and not having borrowed extensively from other languages. Odia language includes some major dialects like-kataki (Central Odia), Baleswari (Eastern Odia), Sambalpuri (Western Odia), Ganjami (Southern Odia), Sundargadi (North Western Odia), Desia (Koraputi Odia) and some minor Odia dialects like- Singhbhumi Odia, Phulabani Odia, Kalahandi Odia, Debgadi Odia, Medinipuri Odia etc. It has also some tribal dialects and some sociolects. It has its own grammer, follows some grammar parts from Sanskrit grammar. It has its own scripts (Kalinga scripts). The script was developed more than 1000 years before. Originally it was a practice of writing on palm leaves. Sarala Das is one of the ancient poets. His Mahabharata is very famous. There are a large number writers and poets who enriched Odia literature. Some of them are – Upendra Bhanja, Baladev Rath, Radhanath Ray, Madhusudan Rao, Fakir Mohan Senapati, Gangadhar Meher, Gopabandhu Dash, Mayadhar Manasingh, Kuntala Kumari Sabat etc. Some modern Odia writers are – Manoj Das, Gopinath Mohanty, Sachi- Danand Routary. Soubhagya Mishra, Ramakanta Rath, Sitakant Mahapatra, Pratibha Ray, Rajendra Kishore Panda, Jayant Mahapatra etc.
Sitakant Mahapatra is an eminent poet from Odisha who has been awarded the Orissa Sahitya Akademy Award, Jnanpith Award, Padma Bhusan, Padma Vibhus—an,SAARC Literary Award, Tagore Peace Award, Kabeer Samman, etc.

He served as an Indian Administrative Service (IAS) officer from 1961 to 1995. He served as chairman of the National Book Trust (NBT), New Delhi. He has held many prestigious positions like Secretary, Culture, Govt. of India, President, UNESCO's World Decade for Cultural Development, Senior fellow of Harvad University, Honorary fellow of International Academy of poets. He got award of the Highest Honour by Soka University of Tokyo. Some of his works are – Ashtapadi, Shabdara Akasa, Ara Drushya, Shreshtha Kavita, Aneka Sarata Ushavilasha. All these are originally written in Odia and later on translated into many languages including English. His English works are – The Ruined Temple and other poems, Unending Rhythms, Grandmother, Death of Krishna and other poems, The Awakened wind, The oral poetry of the Indian Tribes,The Sky of words, The Cockfight, Bhim Bhoi, Kubj and other poems.
Jayant Mahapatra is the first Indian Poet to win Sahitya Academy Award for English poetry. He is a part of trio of poets like- Jayant Mahapatra, A.K Ramanujan and R. Parthasarathy. His contribution to Odia and English literature is immortal and praiseworthy. He was awarded with Padma Shri. His poems, prose pieces, short stories are unique. He is the editor of a magazine named Chandrabhaga. He is a prominent Indian writer in English. He was awarded with Jacob Glatstin Memorial award,Allen Tete poetry Prize, the SAARC Literary Award, Tata Literature Lifetime Achievement Award etc. His poems are – Close the Sky Ten by Ten, Swayambar and

other poems, A Father's Hours, Waiting, The False Start, Relationship, Collected poems etc. His Odia poems are – Bali, Baya Raja, Chali, Tikie Chhayee etc.

Both Sitakant Mahapatra and Jayant Mahapatra have wide contribution to English Literature. They write on various issues, subjects and themes. On rustic life, both the poets have written many poems. They explore different details of village life, villagers and their way of living ,thinking and behaving. As India is a country of villages and village life is background of urban and modern life, we like to study their poems for information, uniqueness, connection and originality.

Review of Literature:-

The findings of some studies are as follows :

Das (2001) studied on Jayant Mahapatra's poems. His objective of the study was to find out the meaning and philosophical approaches.

Jha (2008) Studied the themes and imagery of the poetry of Jayant Mahpatra.

Maharana (2014) Conducted a research on his contribution to English literature. The main conclusion was to discuss the details of his writings in English for English literature.

Mitra (2011) Studied on poetry of Jayant Mahapatra in connection to imagery and experimental identity.

Nair (2013) Studied on Jayant Mahapatra's contribution to Odia literature in particular.

Panda (1998) Studied on Sitakant's philosophical approaches. The main objectives of the study was to find out his philosophical approaches in his poems.

Sahoo (2006) Studied on Sitakant Mahapatra's contribution to Odia literature. The main conclusion of the study was to analyze the details of his writings in Odia language.

Swarnkar(2007) Studied on Jayant Mahapatra's selected poems on ecological aspects. The main objective was to study ecological link with his poems.

Tamboli (2009) Conducted a research on themes and imagery of the poetry of Sitakant Mahapatra.

Regarding rustic life aspects, no study is found on poems of Sitakant Mahapatra and Jayant Mahapatra. The researcher wants to anylise rustic life aspects in some selected poems of Sitakant Mahapatra and Jayant Mahapatra.

Importance of the study :-

The above-mentioned analytical study shows the justification of the present research. No study is done to find out the rustic life and remote life elements in some selected poems of Sitakant Mahapatra and Jayant Mahapatra. While writing a poem, a poet consciously or unconsc-iously incorporates one or many ideas or themes. It shows the commitment and his role to change the society constructively. Both Sitakant Mahapatra and Jayant Mahapatra are no exception in this regard.

आधुनिक समय में मूल्य-संक्रमण

डॉ. प्रमोद कुमार
हिंदी विभाग,
सरिया कॉलेज, सरिया, गिरिडीह (झारखण्ड)- 825320
ईमेल- pramodkumarprince413@gmail.com
सम्पर्क सूत्र- 7870296211

सारांश :

'मूल्य' वर्तमान समय का बहुचर्चित शब्द है। यह शब्द दर्शनशास्त्र, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान आदि से सम्बद्ध होने के कारण अनेकार्थी हो गया है। आधुनिक संस्तुति के संकट ने जिस नए भावबोध को जन्म दिया है उसका मूल्यांकन संवेदना, आधुनिक जीवन और बदलते मूल्य के संदर्भ में आवश्यक है। सामान्यतः मूल्य-प्रणाली की पृष्ठभूमि में मूल्य-परिवर्तन, मूल्य-विघटन, मूल्य-संकट, मूल्य-संक्रमण आदि शब्दों का काफी प्रयोग मिलता है। इन सभी में सूक्ष्म भेद तो है पर वे एक ही अर्थ के द्योतक हैं और वह है- मूल्यों में बदलाव। इनमें से अपेक्षाकृत मूल्य-संक्रमण शब्द कुछ भिन्न अर्थ में प्रयुक्त होता है। यह 'मूल्य-संक्रमण' मूल्य-परिवर्तन व नवीन मूल्यों के स्थिरीकरण के बीच की वह स्थिति होती है, जब मनुष्य के लिए पुराने मूल्य नये युग के संदर्भ में अनुचित लगने लगते हैं और नये मूल्य भी स्थापित नहीं हो पाते। परिवर्तन रूपी इस चक्र के कारण ही मूल्य-संक्रमण की स्थिति और नवीन मूल्यों के उद्भावना की स्थिति उत्पन्न होती है। इस शोध-आलेख में आधुनिकता के आलोक में मूल्य-संक्रमण के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला जा रहा है।

बीज शब्द : मूल्य, संक्रमण, परिवर्तन, संकट, विघटन, आधुनिक, जीवन, युग, धारणा, साहित्य, संस्कृति

मूल आलेख :

'मूल्य' चिंतन, विचार और धारणा की उपज है जो मनुष्य तथा उसके जीवन को अर्थवान बनाता है। परिस्थितियों के अनुसार मूल्यों में परिवर्तन स्वाभाविक है। प्राचीन युग में मनुष्य जिन परिस्थितियों में जी रहे थे उसी के अनुरूप मूल्यों की स्थापना की। परन्तु आज के इस संक्रमण युग में स्वतंत्र भारत पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित है जिससे मूल्य में टकराव और विघटन की स्थिति उत्पन्न हो रही है। समस्याओं व संकट के इस युग में मनुष्य का तीव्र भौतिक विकास तो हो रहा है पर मूल्यों का संरक्षण नहीं हो पा रहा है। उल्लेखित है कि मूल्य-संकट, मूल्य-विघटन, मूल्य-परिवर्तन, और मूल्य-संक्रमण सूक्ष्म भेद के साथ ही एक-दूसरे के पर्याय हैं। इन संकल्पनाओं में जो सूक्ष्म अर्थ-भेद है उसे स्पष्ट करना आवश्यक है।

मूल्य-संकट- 'मूल्य-संकट' मूल्यों पर मंडरा रहे खतरे की ओर संकेत करता है। आधुनिक युग में मूल्यों में ह्रास होने से मूल्यहीनता की स्थिति उत्पन्न हो रही है, जिससे कई विसंगतियां उभरकर सामने आ रही हैं। इस संबंध में कहा भी गया है कि "जब किसी युग और समाज में अन्यान्य कारणों से मूल्यों के प्रति अनास्था निर्माण हो जाती है, तो पुराने मूल्य तो टूटकर बिखर जाते हैं और आस्थाहीन समाज नए मूल्यों को भी सहजता से नहीं अपना पाता। तब मूल्य में संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।"[1] इस प्रकार मूल्य-संकट से उत्पन्न परिस्थितियाँ मनुष्य के मूल्य-बोध को प्रभावित करती हैं।

मूल्य-विघटन- 'विघटन' शब्द संगठन का विपर्यय है। मूल्य एक प्रकार की धारणा है और धारणा को बने रहना संगठन कहलाता है। जब किसी वस्तु, भाव या विचार के प्रति एक से अधिक धारणाएं बन जाती हैं तो मत भिन्नता के कारण विघटन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। परिणामस्वरूप समाज, धर्म, अर्थ, नीति, दर्शन, राजनीति आदि के संबंध में नयी-नयी मान्यताओं का उदय होने से प्रतिष्ठित सांस्कृतिक मूल्यों का विघटन होने लगता है। डॉ. नगेंद्र के अनुसार "विघटन का अर्थ है अस्वीकृति तथा निषेध- अर्थात् प्रकारांतर से एक और सत्य, शिव और सुंदर की धारणा और दूसरी ओर सद्-सत, शुभारंभ व सुंदर-असुंदर का निर्णय करने वाले तत्वों अथवा प्रतिमानों का निषेध।"[2] विघटन की इस प्रक्रिया में पूर्व-प्रतिष्ठित मूल्य समाज से पूरी तरह बहिष्कृत नहीं होते, बल्कि पुरातन मूल्य ही अपना रूप बदलकर एक नए रूप में प्रतिष्ठित होते हैं।

मूल्य-परिवर्तन- 'परिवर्तन' सृष्टि का नियम है जिसे बदलाव या किसी भी प्रकार के अंतर का सूचक कहा जा सकता है। इस संदर्भ में कह सकते हैं कि जब किसी वस्तु की पूर्व अवस्था में बदलाव और वर्तमान अवस्था में कोई अंतर आ जाए तो वह परिवर्तन कहलाता है। इन्हीं नियमों से मूल्यों में होने वाला परिवर्तन मूल्य-परिवर्तन है। डॉ. भैंरू लाल गर्ग ने कहा है कि "परिवर्तन से तात्पर्य यह नहीं कि वह विकासात्मक प्रक्रिया ही हो। किसी वस्तु में पहले की अपेक्षा विकास होता है अथवा गिरावट आती है, किंतु उसके स्वरूप में अंतर अवश्य आता है, अतः इन दोनों प्रक्रियाओं को हम परिवर्तन ही कहेंगे।"[3]

मूल्य-संक्रमण- भिन्न अर्थ में प्रयुक्त 'मूल्य-संक्रमण' मूल्य-परिवर्तन और नवीन मूल्य के स्थिरीकरण के बीच की वह स्थिति है जिसमें पुराने मूल्य नये युग के संदर्भ में अनुचित प्रतीत होते हैं और नवीन मूल्य भी स्थापित नहीं हो पाते। युग विशेष समाज में प्रचलित मूल्यों के प्रति जब लोगों में अनास्था के भाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो विद्यमान मूल्यों में टूटन और बिखराव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। हालांकि आस्थाहीन स्थिति में नवीन मूल्य सहज रूप से स्वीकारे नहीं जाते। यही स्थिति मूल्य-संक्रमण है। हालाँकि मूल्य-संक्रमण से समाज में मूल्य में बदलाव आने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। डॉ. रामगोपाल सिंह ने लिखा है- "माना कि पुरानी आस्थाएँ टूट रही हैं, लेकिन नई आस्थाओं के निर्माण की अनिवार्यता का महत्व भी अपनी जगह पर है। आस्था ही तो वह जड़ है जिससे मनुष्य अपने जीवन के वृक्ष में हर पतझड़ के बाद नई बाहर लाता है। पुरानी आस्थाएँ मिट रही हैं नई आस्थाएँ जन्म ले रही हैं।"[4] इन बदलती आस्थाओं-विश्वासों के समान गति से मूल्यों में भी परिवर्तन होने शुरू हो जाते हैं। पूर्व में स्थापित मूल्यों के स्थान पर नई आस्थाओं व मूल्यों की निकटता मूल्य-संक्रमण का बोध कराता है। मानवीय व सामाजिक चेतना के संसर्ग से स्थापित नवीन मूल्यों को स्थाई स्वीकृति मिलने से पूर्व की स्थिति संक्रमण काल कहलाता है।

मानव-बौद्धिकता की वैचारिक अभिव्यंजना के आधार पर ही मूल्यों का उत्थान और पतन होता है। मनुष्य की प्रवृत्तियों के साथ मूल्यों का निर्माण, चयन, ग्रहण, वर्जन, त्याग एवं स्थापना होती है। मानव जीवन में मूल्य सुनिश्चित नहीं है। प्रतिकूल परिस्थितियों में मूल्यों में बदलाव व मूल्य संक्रमण की संभावना हर क्षण बनी रहती है क्योंकि मानव-जीवन में मूल्य सुनिश्चित नहीं होते। धर्म, संस्कृति, विचारधाराएँ, भाषा, आचरण-व्यवहार आदि मूल्य परिवर्तन के अनेक कारण हैं। वहीं मूल्य-संक्रमण मूल्यों की उत्पत्ति और विघटन के समानांतर चलने वाली प्रक्रिया है। इस मूल्य संक्रमण की प्रक्रिया और परिवर्तन की केंद्रीय शक्ति मानव में ही निहित होती है। डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ ने मूल्य-संक्रमण की स्थिति पर विचार करते हुए माना है कि "जीवन की गति के संदर्भ में निरंतर संघर्ष और अंतर्द्वंद्व के कारण मानवीय और सामाजिक मूल्यों में निरंतर परिवर्तन की एक विशिष्ट अंतर्धारा संक्रमण की ओर विकसित होती है।"[5]

वैसे तो मूल्य संक्रमण के कई कारण हो सकते हैं। एक ओर देखा जाए तो समाज में प्रचलित नैतिक व्यवस्था एवं मनुष्य की वर्जितोन्मुखी अंतर्बोध का द्वंद्व, आदर्श और यथार्थ का निरंतर संघर्ष तथा मनुष्य का नवीन खोज के प्रति आकर्षण एवं मनुष्य की बाह्य जीवन-परिस्थितियाँ मूल्य संक्रमण के आधार सिद्ध होते हैं। वहीं मानव-इतिहास से और भी कई कारण सिद्ध होते हैं जैसे- राजनीतिक शक्तियाँ, सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियाँ, आर्थिक शक्तियाँ, धार्मिक परिस्थितियाँ, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं वैचारिक दृष्टियाँ आदि। स्पष्ट है कि जीवन-मूल्यों में देश-काल-परिस्थिति की अपेक्षाओं के अनुरूप परिवर्तन-संक्रमण एक अनिवार्य एवं स्वाभाविक प्रक्रिया है। जहाँ युगीन परिस्थितियाँ मूल्य-तंत्र को निर्मित करती हैं, वहीं इनके बदलने से मूल्य संक्रमित और परिवर्तित होते हैं।

मूल्य-संक्रमण व मूल्य-संकट आज सर्वाधिक ज्वलंत समस्या का रूप ले लिया है, जिससे केवल भारत में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में अतिवाद का खतरा दिख रहा है। आधुनिक युग में वैज्ञानिक प्रगति और नितनूतन आविष्कारों से मनुष्य भौतिक उन्नति के साथ-साथ अपने जीवन को अत्यधिक संपन्न व सुविधाजनक तो बना लिया है, परंतु जिस तरह उपभोक्तावादी संस्कृति का वर्चस्व बढ़ा है उससे मनुष्य की प्राचीन स्थापनाएँ, मान्यताएँ, विश्वास व आस्थाएँ अत्यधिक प्रभावित हुई हैं। आज के दौर में मनुष्य भौतिक सुखों के भुलावे में अपनी सभ्यता-संस्कृति के श्रेष्ठ तत्वों व संपूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करने वाले पारस्परिक मूल्यों से विच्छिन्न हो रहा है। व्यक्ति का आत्म-केंद्रित होने से मानव-मानव के बीच दूरियां बढ़

रही हैं और मानव संस्कृति पर संकट गहराता जा रहा है। इस प्रगति व विकास यात्रा में परंपरागत मूल्यों पर प्रश्न-चिन्ह खड़ा कर उन्हें अस्वीकार तक किया जाने लगा है। धार्मिक-दार्शनिक व सांस्कृतिक-सामाजिक आदि मूल्य नष्ट-भ्रष्ट हो रहे हैं। आधुनिकीकरण के दौर में पढ़े-लिखे लोग भी भौतिक सुख को जीवन का बड़ा मूल्य समझकर अनैतिक कार्य करने लगते हैं जिससे अन्य मूल्यों का हनन होता है। इस परिस्थिति में मूल्योंमुखी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की नितांत आवश्यकता है क्योंकि मूल्यपरक जीवन से ही मानवता की रक्षा की जा सकती है।

निःसंदेह मानव जीवन को गतिशील बनाने में मूल्यों की अहम भूमिका है। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार, "जो जीवन को अस्तित्व और गति प्रदान करे, वही मूल्य हैं।"[6] यह सत्य है कि गतिशीलता की इस प्रकिया में कुछ परंपरागत-मूल्य रूढ़िबद्ध होकर अनुपयोगी और निरर्थक हो जाते हैं। इसके बाद नये-नये मूल्यों का उद्भव-विकास होता है। संक्रांतिकाल के दौरान मूल्यों के विघटन से सामाजिक विसंगतियों का प्रभाव समाज के समस्त अंगों-कार्यों पर पड़ता है। इन्हीं स्थापित मूल्यों के स्थान पर नवीन प्रेरणाओं अथवा नयी आस्थाओं के जन्म से संक्रमण का बोध होता है। समाज के इस संक्रमण से साहित्य भी अछूता नहीं है और न ही इसके मूल्य भी स्थिर और बंधे-बँधाए रह पाते। साहित्य हमेशा समाज के अनुकूल ढलता है, साथ ही युग के बदलते क्रम में परिवर्तन व नवीनता को अभिगृहीत करता है। अनेक विचारकों व चिंतकों की विचार-दृष्टियाँ, जीवन-दृष्टियाँ साहित्य में सिद्धांत रूप में प्रतिष्ठित होकर मूल्य बन जाती हैं और जनमानस के चिंतन को अपेक्षित नवीन दिशा प्रदान कर जीवन-मूल्य के संक्रमण का आधार बनती है।

जीवन व समाज में परंपरागत मूल्यों के विघटन एवं नये मूल्यों की स्थापना में साहित्यकारों का विशेष योगदान होता है। मूल्य-संक्रमण को दृष्टि में रखकर हम यहाँ दो प्राचीन महाकाव्य 'रामायण' और 'महाभारत' की चर्चा जरूर करेंगे। ये दोनों महाकाव्य भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है पर मूल्य की दृष्टि से ये एक ही युग में दो विरोधी मूल्यों वाली रचना कही जायेगी, जो मानव-मन में द्वंद की स्थिति उत्पन्न करती है। एक ओर 'महाभारत' मनुष्य को आपसी झगड़ा के लिए प्रेरित करता है वहीं दूसरी ओर 'रामायण' में राज न करने का संघर्ष दिखता है। रामायण में राज न करने की कथा चित्रित है वहीं महाभारत में दूसरे पक्ष को पाँच गाँव भी नहीं देने का संघर्ष चलता है। दोनों महाकाव्य विध्वंसक व मंगलकारी के रूप में मानव को अत्यधिक प्रभावित करता है। चूँकि मनुष्य आशावादी होता है इसलिए वह ऐसे संक्रमण में भी मंगलकारी मार्ग को ही पसंद करता है। समाज अथवा युग-परिवर्तन मूल्य में बदलाव का प्रमुख कारण माना जाता है क्योंकि मूल्यों की स्थापना सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृति, धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के आधार पर होता है। समय के साथ कुछ नये मूल्य बनते हैं और कुछ मूल्यों का ह्रास भी होता है। साहित्य हमें मूल्य के प्रति जागरूक करता है। साहित्य एक तरफ नवीन मूल्यों की रचना कर दूषित सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध नवीन व्यवस्था की स्थापना करता है तो दूसरी ओर समाज को निष्क्रिय बनाने वाले मूल्यों का प्रतिकार भी करता है।

यह सत्य है कि मानव जीवन को सम्यक् और सुचारु रूप से परिचालित करने के उद्देश्य से विद्वानों ने जीवन के कुछ मापदण्डों का निर्धारण किया और उन्हीं के आधार पर मूल्य की अवधारणा अस्तित्व में आई। इस दृष्टिकोण से मूल्य का अर्थ मानव जीवन के संदर्भ में ही महत्त्व रखता है। जीवन के अभाव में मूल्य चिन्तन तो दूर की बात है, मूल्य शब्द का अस्तित्व भी सिद्ध नहीं किया जा सकता। स्पष्टतः मूल्य शब्द का आशय मूलतः जीवन-मूल्य अर्थात् जीवन के मापदण्ड से ही है। जीवन की बात आते ही 'जीवन कैसा है' और 'कैसा होना चाहिए' दो पक्ष हमारे सामने आते हैं। कैसा है का सम्बन्ध वर्तमान (यथार्थ) से है और कैसा होना चाहिए का सम्बन्ध भविष्य (आदर्श) से है। जब हम इस पर विचार करते हैं कि 'जीवन कैसा है' तब हमारा सम्बन्ध तथ्य से होता है और जब हम इस पर विचार करते हैं कि जीवन कैसा होना चाहिए तो हमारा सम्बन्ध मूल्य से होता है। डॉ. नगेन्द्र के अनुसार- "मूल्य पदार्थ की सार्थकता एवं आंतरिक महत्त्व का ही वाचक है, उसके स्वरूप या प्रकृति का नहीं।"[7]

कहना उचित होगा कि किसी भी विचार या दृष्टिकोण को मूल्य के रूप में स्वीकार करने हेतु उसमें दो मूल बातों का होना आवश्यक है। एक तो यह कि वह दृष्टिकोण या वैचारिक सत्य मनुष्य के चिन्तन का परिणाम हो और दूसरे वह 'सत्य', 'सुन्दर' और 'शिव' से युक्त हो क्योंकि मूल्य जीवन की एक अन्तर्दृष्टि है, एक दृष्टिकोण है, एक अवधारणा है। चिन्तन की दृष्टि से जहाँ जीवन मूल्य नितान्त वैयक्तिक सत्य है, वहीं लक्ष्य की दृष्टि से उसे समाज स्वीकृत सुन्दर तथा शिव का अनुगामी होना चाहिए। भारतीय संस्कृति का चरम लक्ष्य सत्यं, शिवं, सुन्दरं युक्त मानवीय चिन्तन का निचोड़ ही जीवन मूल्य कहलाता है। मूल्यों के सम्बन्ध में जब हम अपनी परम्परा और संस्कृति की ओर दृष्टिपात करते हैं तो हम पाते हैं हमारी सभ्यता और संस्कृति आध्यात्मिक रही है और आध्यात्मिक दृष्टिकोण को केन्द्र में रखकर ही हमारे ऋषि-मुनियों एवं चिन्तकों ने जीवन के कुछ मापदण्ड निर्धारित किए हैं। हमें समकालीन युगबोध, मूल्य संक्रमण और परिस्थितियों के घात-प्रतिघात पर चिंतन और विश्लेषण करने की जरूरत है। यह जानने की जरूरत है कि परम्परागत भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों ने हमें नए दृष्टिकोण प्रदान किये हैं। हमारे परम्परागत पुरुषार्थ चतुष्टय की अवधारणा में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जीवन मूल्य के ही पर्याय हैं।

जीवन की श्रेष्ठता का अर्थ मनुष्य ही खोजता है क्योंकि वह विवेकशील प्राणी है और उसके भीतर अलग-अलग धारणाएं और विचार बनते हैं। उसका जीवन प्रकृति के साथ मुठभेड़ करते हुए नहीं बीतना चाहिए अपितु प्रकृति के सहचर के रूप में दिखाई देना चाहिए। विवेक उसे सभ्यताएँ विकसित करने का विचार देता है और प्रकृति के रहस्यों को सुलझाने की शक्ति देता है। आधुनिक दौर के भारतवर्ष में नगरीकरण का जोरदार प्रभाव रहा है। इस नगरीकरण से उद्योग तथा वृहद स्तर पर वैज्ञानिकीकरण का प्रसार हुआ है, जिसने हमारे जीवन के ढंग को बदल दिया है। इससे सांस्कृतिक तथा जीवन की पुरानी धारणाएँ विनष्ट भी हो रही हैं और नई मान्यताएँ समाज में प्रसार पा रही हैं।

आज हम संस्कृति और मूल्यों के एक विशाल युद्ध में खड़े हैं, जो जीवन के प्रत्येक स्तर पर, प्रत्येक चरण पर, प्रत्येक पहलू में सहस्रों रूपों में दिन-रात चल रहा है। आज पाश्चात्य एकरूपीकरण इसी सांस्कृतिक युद्ध का एक लक्षण है। इस सांस्कृतिक युद्ध में पुराने मूल्य, पुराने स्वप्न, पुरानी राजनीति बार-बार पराजित हो रहे हैं, टूट रहे हैं, बिखर रहे हैं। वर्तमान में भूमण्डलीकरण के कारण मनुष्य का दायरा सीमित नहीं रहा। उसका संबंध देश और समय की सीमाओं को लाँघकर बहुआयामी हो गया है। आज मनुष्य भौतिक समृद्धि की ओर तेजी से बढ़ तो रहे हैं, पर वे उच्चतर मूल्यों से पृथक भी हो रहे हैं।

निष्कर्ष :

स्पष्ट है कि मूल्य-संक्रमण एक सार्वभौमिक और निरंतर होने वाली अनिवार्य प्रक्रिया है। मनुष्य व समाज निरंतर परिवर्तन के दौर से गुजरता रहता है। परिस्थितियों में बदलाव के साथ स्थापित मूल्यों में विचलन से मूल्य-संक्रमण की स्थिति बन जाती है। यह भी सर्वमान्य है कि नवीनता के नाम पर सभी परंपरागत मूल्य त्यागने योग्य नहीं है और न ही उनका अंधानुकरण सही है। वैसे तो सभी मूल्य मानव सापेक्ष होते हैं इसी कारण उसकी सांस्कृतिक और भौगोलिक परिवेश से मूल्य प्रभावित भी होते हैं। जहाँ विभिन्न देशों में मूल्यों की एकरूपता असंभव है, वहीं एक ही देश में मूल्यों में भिन्नता दिखाई देती है। अतः आज हमें मूल्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। हमारे लिए पुरातन में से शुभ-उपयोगी मूल्यों का चयन, अनुपयोगी मूल्यों का त्याग और वैज्ञानिक दृष्टि से स्थापित समाजोपयोगी नवीन मूल्यों को स्वीकार करना ही श्रेयस्कर होगा।

आओ मिलकर पेड़ लगाएँ

डॉ. प्रमोद कुमार
हिंदी विभाग

जन–जन तक यह संवाद पहुँचाएँ ।
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ ।।
मिलता इससे स्वच्छ प्राणवायु]
पर्यावरण को यह करता शुद्ध ।
हे! मानव अब तो हो जाओ प्रबुद्ध ।।
आज तप रही धरती, तप रहा शरीर ।
फिर क्यों नहीं जागता हमारा जमीर ।।
चाहिए हमें ठंडी हवा और छाया ।
फिर क्यों हमने जंगल में आग लगाया ।।
करें समीक्षा और मन में एक संकल्प जगाएँ ।
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ ।।
कब तक लेंगे कूलर और ए. सी. का सहारा ।
उचित समाधान नहीं तो, कल यही उगलेगा अंगारा ।।
पौधों को वृक्ष बनने में लगते कई साल ।
आज नहीं संभले तो कल होगा जीना मुहाल ।।
इसके अभाव में वर्षा नहीं, पड़ जाएगा अकाल ।
अन्न के बिना हम हो जाएंगे कंकाल ।।
चलो इस समस्या को जड़ से मिटाएँ ।
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ ।।
प्रकृति सौंदर्य का यह विशेष आभूषण ।
दूर करता है इस जग का प्रदूषण ।।
पेड़ काटकर नष्ट न करें इसकी हरियाली ।
इसके बिना जीवन में कैसे आएगी खुशहाली ।।
पृथ्वी का श्रृंगार बढ़ाकर, इसे स्वर्ग सा सुंदर बनाएँ ।
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ ।।

IMPORTANCE OF RESEARCH IN GEOGRAPGY

PROF. ASIT DIWAKAR
Head of Geography Department
Sariya college,Suriya
Email. I.D – asitdiwakar@gmail.com

Research is a search of knowledge. It is defined as scientific and systematic search for relevant information on a specific topic. In fact, research is an art of scientific investigation. According to Woody "research accumulated formulating research problem, formulating hypothesis, collecting and evaluating data and making hypothesis and suggested research conclusion and finally testing the hypothesis".

Identifying a natural or human problem using scientific methods and techniques and solving that problem from a geographical point of view is called geographical research. In another word, the research problem should be a geographical problem. The observation of the research study should emphasize how the geographical problems act and leads to deterioration of physical or human environment.

Research is absolutely vital in geography for a multitude of reasons. Here's a breakdown of why it's so important:

1. Understanding a Complex World:

- Interconnectedness: Geography explores the intricate relationships between people, places, and the environment. Research helps unravel these complex connections, revealing how human activities impact the planet and vice versa.
- Spatial Patterns: Research allows geographers to identify and analyse spatial patterns, whether it's the distribution of natural resources, the spread of diseases, or the growth of cities. Understanding these patterns is crucial for addressing various challenges.
- Dynamic Processes: The world is constantly changing. Research helps geographers' study dynamic processes like climate change, urbanization, and migration, allowing them to predict future trends and their potential impacts.

2. Addressing Real-World Problems:

- Environmental Issues: Geographical research is essential for understanding and mitigating environmental problems like climate change, deforestation, and pollution. It provides data and insights for developing sustainable solutions.
- Social and Economic Challenges: Research helps address social and economic issues such as poverty, inequality, and access to resources. By analysing spatial disparities, geographers can inform policies that promote equity and development.
- Disaster Management: Geographical research plays a crucial role in disaster preparedness and response. By mapping vulnerable areas and understanding the causes of disasters, geographers can help communities become more resilient.

3. Advancing Knowledge and Theory:

- Expanding the Field: Research contributes to the growth of geographical knowledge by generating new data, developing theories, and refining existing concepts.
- Interdisciplinary Connections: Geography is an interdisciplinary field that draws on knowledge from various disciplines. Research fosters collaboration with other fields, leading to a more holistic understanding of the world.

4. Developing Essential Skills:

- ❖ Critical Thinking: Research requires critical thinking skills to analyse data, evaluate evidence, and draw conclusions.
- ❖ Problem-Solving: Geographers use research to investigate problems, identify solutions, and make informed decisions.
- ❖ Communication: Research involves communicating findings through reports, presentations, and publications, enhancing communication skills.

Types of research in geography

A. Research areas in physical geography

- ❖ Processes of landform development.
- ❖ River basin development and management.
- ❖ Stream flow alternation and consequences.
- ❖ Environmental quality assessment and consequences- water quality, air quality, ecological environmental quality, Climate change.
- ❖ Ecological risk assessment- wetland landscape, vegetation community.
- ❖ Ecosystem services of wetlands, vegetation, rivers, etc.
- ❖ Hazard Assessment - landslide prone zone, flood prone zone. θ Spatial modelling of soil erosion.
- ❖ Soil erosion susceptibility assessment.

B. Research areas in human geography

- ❖ Urbanization- process and threats, consequences, Urban sprawl, etc.
- ❖ Deprivation - Multi dimensional poverty, Infrastructural deprivation, Socio-economic deprivation
- ❖ Quality of life.
- ❖ Land use land cover change assessment and their implementation in different perspectives – biodiversity.

Significance of research in geography

I. Helps to know about the nature and extent of the research problem and suggested the possible solutions on the specific area.

II. Helps to make predictions about the future scenario.

III. The outcomes of the research studies can establish new ideas and helps to other researchers to construct the theoretical basis of their study.

IV. Helps to establish the relationship human and nature.

V. The outcomes of research observations help to the policy makers and planners to formulate new plan and policies or guidelines for solving the problem.

In the context of 2025:

Geographical research is becoming even more critical as we face pressing global challenges like climate change, urbanization, and resource scarcity. By conducting research, geographers can provide valuable insights and solutions to create a more sustainable and equitable future.

In conclusion, research is the engine that drives geographical knowledge and its application to real-world problems. It is essential for understanding our complex world, addressing critical challenges, and shaping a better future.

Why Study Sociology?

Dr. Sweta
Dept. of Sociology
Sariya College, Suriya

Understanding the intricacies of human societies demands a thorough examination of their diverse components. Sociology, as a science, offers critical insights into the structures, interactions, and dynamics that shape societies. This exploration is critical for a variety of professions and applications, including education, law and business.

Sociology is the systematic study of society, social organisations, and interactions. It investigates how people interact in various environments, as well as the consequences for individual behaviours and larger societal structures. Sociology examines institutions such as family, education, politics, and religion to better understand how societies function and evolve.

Sociology examines many institutions that have a significant impact on our lives. For example, the family is studied to better understand its impact on individual socialisation, cultural transmission, and support systems. Changes in the education system, such as the popularity of online learning and the emphasis on inclusive education, reflect shifting societal values and technical advancements.

Sociology offers vital insights into how societies work. It demonstrates how social institutions are linked and jointly influence people and groups. Understanding these interactions enables sociology to solve social challenges and promote a more equal and just society. Sociology is critical for understanding and addressing social problems. It provides methods for analysing societal trends, habits, and institutions, hence assisting in the development of more equitable and efficient policies and practices across different sectors.

Culture is an important concept in sociology, including the beliefs, practices, and values that shape societies. Culture is important in sociology because it helps us understand how societies work and how cultural changes affect social structures and individual behaviours. Students of sociology learn how to critically analyse social phenomena, understand human behaviour in context, and successfully address societal concerns. The value of studying sociology includes developing critical thinking skills, empathy, and a greater awareness for diversity and social justice.

Sociology covers many facets of social life, including institutions, relationships, and social processes. Sociology's scope and importance stem from its capacity to provide a complete understanding of societal processes while also informing policies and practices in a variety of sectors.

The sociology of education is essential for understanding how educational systems perpetuate or fight social inequities. The value of researching educational sociology is that it aids in the development of policies that promote fairness and equal access to quality education.

Sociology is important because of its potential to provide a more in-depth understanding of social realities. It enables individuals and institutions to understand and address complex social issues, resulting in a more informed and empathic society.

Sociology graduates are well-prepared for a variety of employment routes, demonstrating sociology's multidisciplinary nature. They can work in NGOs, education, civil service, research, human resources, journalism, the corporate sector, and international organisations such as UN agencies. Furthermore, the curriculum prepares students for careers in domains such as environmental science, journalism, public health, and law, while also providing opportunities for additional study and specialisation through fellowships and graduate studies in allied disciplines.

Graduates can work as social workers, market researchers, policy analysts, human resources specialists, urban planners, and community service managers, using their research and social dynamics abilities to address societal issues and increase community well-being.

झारखण्ड़ की राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. अशीष कुमार सिंह
सरिया कॉलेज, सरिया
Phone No. 7859089681
Email –ashishkumarsinghhaz@gmail.com

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में दलीय व्यवस्था आवश्यक है, जिसमें क्षेत्रीय दलों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि ये दल ही क्षेत्रीय मुद्दों को जोर–शोर से उठाते है और पूरे देश का ध्यान आक्रर्शित कर उसके निर्वारण के लिए प्रयासरत रहते है। भारत में क्षेत्रीय दलों का इतिहास बहुत पुराना है भारत की विविधता क्षेत्रीय दलों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। पंजाब, कश्मीर, तमिलनाडु में क्रमशः अकालीदल, मुस्लिम कॉन्फ्रेंस जस्टिस पार्टी का गठन हुआ जो अपनी अलग पहचान रखती थी। भारत एक लोकतांत्रिक देश है जिसकी व्यवस्था जनता के द्वारा जनता के हित में बनाया जाता है।

भारत में संघीय शासन में संघ के द्वारा जो नीतियां और कार्यक्रम बनाए जाते हैं वो राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर बनाया जाता है। जिसके कारण क्षेत्रीय समस्याएं था तो उपेक्षित रह जाती हैं या उस पर कम ध्यान दिया जाता है। जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय दलों का उदय होता है। यही कारण है कि भारत में लगभग सभी प्रांतों में क्षेत्रीय दल देखने को मिलता है। कुछ प्रांतों में क्षेत्रीय दल इतने मजबूत स्थिति में है जिसके सामने राष्ट्रीय दलों का कोई वर्चस्व नहीं है। बी. एल. फाडिया अपनी पुस्तक में 'भारतीय राजव्यवस्था और संविधान' में लिखते हैं– ''राज्यस्तरीय अथवा क्षेत्रीय दलों का अर्थ उस राजनीतिक दल से लगाया जा सकता है। जिसका प्रभाव किसी विशेष राज्य तक सीमित है। उन दलों का दृष्टिकोण राष्ट्रहित में गौण तथा राज्य क्षेत्रीय हित में अधिक होता है।'' लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में क्षेत्रीय दलों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि यह दल न तो केवल क्षेत्रीय मुद्दों की तरफ ध्यान आकर्षित करती है बल्कि उसके समाधान के लिए प्रयासरत भी होती है। भारत में बहुदलीय व्यवस्था अपनाई गई है जिसके कारण कई क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ है। राष्ट्रीय दल की संख्या तो कभी छः तो कभी सात रही, लेकिन क्षेत्रीय दलों की संख्या में बेहतासा वृद्धि होती रही हैं।

झारखंड के राजनीतिक में क्षेत्रीय दलों का प्रभुत्व शुरू से रहा है। यहां अधिकांश निर्वाचन क्षेत्रों से क्षेत्रीय एवं पंजीकृत दलों के उम्मीदवार विजयी होते रहे हैं, जिसके कारण कोई स्थिर सरकार नहीं बन पाई। झारखंड गठन के 15 वर्षों में 10 मुख्यमंत्री बने, जिसके कारण विकास की प्रक्रिया उस गति से नहीं बढ़ पायी जिस गति से बढ़ना चाहिए, झारखंड गठन के बाद भी क्षेत्रीय दलों का विकास हुआ जो यहां की संसदीय राजनीति को प्रभावित करती है। झारखंड गठन के बाद सन 2000 ई. 2022 ईस्वी तक की जितनी भी सरकारें बनी है उन सरकारों में क्षेत्रीय दलों का प्रभाव देखा गया। झारखंड के मुख्य क्षेत्रीय एवं पंजीकृत दलों में झारखंड मुक्ति मोर्चा, ऑल झारखंड स्टूडेंट्स यूनियन (आजसू), झारखंड विकास मोर्चा (प्रजातांत्रिक), जनता दल यूनाइटेड, राष्ट्रीय जनता दल, मार्क्सवादी समन्वय समिति,नवजावन संघर्ष मोर्चा, जय भारत समानता पार्टी, झारखंड दिमोश पार्टी, झारखंड पार्टी (नरेन) झारखंड पीपुल्स पार्टी, जनता पार्टी, झारखंड वनांचल कांग्रेस सदान विकास पार्टी लोक जनशक्ति पार्टी, आदि पार्टियों है जो झारखंड की संसदीय राजनीति की दशा और दिशा तय कर रही हैं। इसके अलावा अन्य राज्यों के क्षेत्रीय दलों ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक, ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस, जनता दल सर्कुलर राष्ट्रीय लोकदल समाजवादी पार्टी भी झारखंड की संसदीय राजनीतिक में अपना प्रभाव रखती हैं।

झारखंड गठन के साथ ही पहली सरकार गठबंधन सरकार थी जिसमें राष्ट्रीय दल भारतीय जनता पार्टी के 33 विधायकों के साथ क्षेत्रीय एवं पंजीकृत दल समता पार्टी के 5 विधायक, जनता दल के 3 विधायक, आजसू समर्पित गोमांतवादी डेमोक्रेटिक पार्टी के 2 विधायक, झारखंड वनांचल कांग्रेस के 2 विधायक, के सहयोग सरकार बनी थी। झारखंड के संसदीय राजनीति का इतिहास रहा है कि यहां अभी तक जितनी भी सरकारें बनी वह गठबंधन सरकार थी। इस गठबंधन सरकार में क्षेत्रीय दलों का ही प्रभुत्व रहा है। क्षेत्रीय दलों ने अपनी इच्छा से सरकार चलाने एवं गिराने की भूमिका में देखा गया।

झारखंड की सांस्कृतिक एवं जातीय बहुलता के कारण राष्ट्रीय दलों के अलावा कई क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ। ये दल झारखंड की राजनीति को प्रभावित करती हैं यही कारण है कि गठन के 22 वर्ष पूरा होने के साथ 11 मुख्यमंत्री देखने को मिले। 2005 ईस्वी में झारखंड गठन के बाद पहली बार विधानसभा चुनाव हुए। इस चुनाव भारतीय जनता पार्टी 30 सीटें, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 9 सीटें, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी 1 सीट जीती। वहीं क्षेत्रीय दलों में झारखंड मुक्ति मोर्चा के 17 सीटें जीती। जनता दल यूनाइटेड 6 सीटें, राष्ट्रीय जनता दल 7 सीटें, भाकपा माले 1 सीट ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक 2 सीट, यूनाइटेड गोमांतक डेमोक्रेटिक पार्टी 2 सीट जीतकर क्षेत्रीय दलों का महत्व झारखंड की राजनीतिक में बढ़ा दी।

भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़ी पार्टी बनकर भी सरकार का गठन नहीं कर पायी और शिबू सोरेन के नेतृत्व में क्षेत्रीय दलों की सरकार बनी। यह सरकार भी अपनी कार्यकाल पूरा नहीं कर सकी और मात्र 10 दिनों में आपसी मतभेद के कारण गिर गयी। पुनः अर्जुन मुंडा के नेतृत्व में क्षेत्रीय दलों के सहयोग से सरकार का गठन किया गया क्षेत्रीय दलों का प्रभाव ही था कि अर्जुन मुंडा सरकार भी मात्र 6 माह 7 दिन में गिर गयी और भारत के संसदीय इतिहास में दूसरी बार किसी राज्य में निर्दलीय सदस्य को मुख्यमंत्री बनाया गया। मधु कोड़ा (निर्दलीय) ने कांग्रेस एवं अन्य क्षेत्रीय दलों के सहयोग से नई सरकार के गठन की, लेकिन मधु कोड़ा सरकार ने भी अपना कार्यकाल नहीं किया। झामुमो के समर्थन वापसी के कारण अगस्त 2008 ईस्वी को इसकी सरकार गिर गयी। पुनः शिबू सोरेन के नेतृत्व में 27 अगस्त 2008 ईस्वी को एक नई सरकार का गठन किया गया जो 18 जनवरी 2009 ईस्वी को गिर गई और राज्य में पहली बार राष्ट्रपति शासन लागू किया गया। राष्ट्रपति शासन के समय ही 2009 ईस्वी में राज्य में विधानसभा के चुनाव हुए इस चुनाव में भी क्षेत्रीय दलों के प्रभाव को देखा जा सकता है। झारखंड मुक्ति मोर्चा ने 18 सीटें, आजसू 5 सीटें, भाकपा माले 1 सीट, जय भारत समानता पार्टी 1 सीट, जदयू 2 सीट, झारखंड विकास मोर्चा 11 सीट, राष्ट्रीय जनता दल 5 सीट, जीती। 2009 ईस्वी के चुनाव परिणाम ने झारखंड के संसदीय राजनीतिक में क्षेत्रीय दलों की महत्व को बढ़ा दिया।

इन क्षेत्रीय एवं पंजीकृत दलों ने कुल सीटों का 58% सीटों पर विजय हासिल की और झारखंड की राजनीति को अपने नीतियों एवं सिद्धांतों पर चलने का विवश किया। इस चुनाव के बाद जो भी सरकार आई उनमें क्षेत्रीय दलों प्रभाव को देखा जा सकता है। पुनः 2011 ईस्वी में विधानसभा चुनाव हुए। इस चुनाव में भी क्षेत्रीय दलों के प्रभाव को देखा जा सकता है झामुमो 17 सीट जीती तो आजसू ने 5 सीटें, भाकपा माले 1 सीट, झारखंड विकास मोर्चा 8 सीट, इस प्रकार क्षेत्रीय दलों ने कुल 43% सीटों पर विजय हासिल किया।

झारखंड के राजनीतिक में क्षेत्रीय दलों का प्रभुत्व शुरू से ही रहा है। यहां अधिकांश निर्वाचन क्षेत्रों से क्षेत्रीय एवं पंजीकृत दलों के उम्मीदवार विजय होते रहें, जिसके कारण कोई स्थिर सरकार नहीं बन पायी। झारखंड गठन के 15 वर्षों में 10 मुख्यमंत्री बने जिसके कारण विकास की प्रक्रिया उस गति से नहीं बढ़ पाई जिस गति से बढ़ने चाहिए।

हाँ नारी हूँ मैं

सुश्री चायरा निशा आईद
(शिक्षण संकाय)
(वनस्पति विज्ञान विभाग)
सरिया कॉलेज, सरिया

हाँ नारी हूँ मैं
सारी की सारी हूँ मैं
हाँ नारी हूँ मैं

आज भी पापा की परी और माँ की गुड़ियाँ हूँ मैं
भाई–बहन का हौसला और अपने परिवार की दुनियाँ हूँ मैं
यारों की यारी और सबकी दुलारी हूँ मैं
हाँ नारी है मैं

दुनिया की शान हूँ मैं
शक्ति की पहचान हूँ मैं
रूठों की मुस्कान हूँ मैं
ईश्वर का सम्मान हूँ मैं
हाँ नारी हूँ मैं

कभी दुर्गा, कभी काली, कभी चंडिका हूँ मैं
कभी कोमल राधा, कभी सरस्वती, कभी लक्ष्मी हूँ मैं
कभी इस समाज की बेकार सोच का शिकार हूँ मैं
तो कभी वक्त–ए–जवाब का निखार हूँ मैं
हाँ नारी हूँ मैं

रो दूँ तो कमजोर नहीं हूँ मैं''
गिर के न उठ पाऊ इतनी बेजोंड़ नहीं हूँ मैं''
अपनों के विश्वास पर खड़ी हूँ मैं
समाज की सोच से तो बड़ी हूँ मैं
हाँ नारी हूँ मैं

जननी हूँ मैं
करनी हूँ मैं
तेरी हर भूल की भरनी हूँ मैं
हाँ नारी हूँ मैं

कीचड़ में कमल हूँ मैं
जो कभी न भूल पाए ऐसी गजल हूँ मैं
परिवार की सबसे अच्छी फसल हूँ मैं
मैं अपनी खुद की असली नकल हूँ मैं
हाँ नारी हूँ मैं

बस एक दिन की नहीं, हर दिन की प्यारी हूँ मैं
हाँ नारी हूँ मैं
सारी की सारी हूँ मैं
हाँ नारी हूँ मैं।

तारों से ज्ञान

चमक रहे हैं तारे भी,
बिन चांद की रोशनी के,
खुद का बनना खुद सहारा,
दूजे पे न करना आसरा,

अंधेरे में भी चमक रहे,
इतनी चमक लानी हैं,
देखे कोई दूर से,
आंखों में बस जाना है,

सूर्य के ताप से न डरना,
रात में वो छुप जाएगा,
कितनी भी हो कठिन परीक्षा,
मेहनत तो रंग लाएगा,

कभी ये लम्बी रात होगी,
कुछ अनोखी बात होगी,
आंखों में भी नींद होंगे,
पर सपनों में ख्वाब होंगे,

कभी भीड़ में रहना होगा,
कभी अकेले चलना होगा,
आएंगे अंधेरे भी आगे,
फिर भी आगे बढ़ना होगा ।

Annu Soni
Sem 1 (24-28)
Roll no – 317
Hindi

ALWAYS THERE

Hello God, I called tonight to talk a little while
I need a friend who'll listen to my anxiety and trials.
You see, I can't quite make it Through a day on my own... I
need your love to guide me, so I'll never feel alone.
Please keep my family safe and sound.
Come and fill their lives with confidence
For whatever fate they're bound.
Give me faith, dear God, to face Each hour throughout the day,
And not to worry over things I can't change in any way.
I thank you God, for being home and listening to my call,
For giving me such good advice, when I stumble and fall.
Your number, God, is the only one That answers every time.
I never get a busy signal, never had to pay a dime.
So thank you, God, for listening to my troubles and my sorrow.
Good night, God, I love You, too, And I'll call again tomorrow!

SAKSHI RAJ
Semester-I
Commerce

ज़िन्दगी

सफर में जब ज़िन्दगी को देखा जो अनजान राहों पर चलते जा रही थी,
कभी संगीत के स्वर की तरह मुस्कुरा रही थी,
तो कभी आंखमिचोली खेल डरा रही थी।
मंजिल तक पहुचने की धुन में बिना रुके वह चलती जा रही थी,
कभी नदियों की तरह बहती तो कभी पहाड़ों से टकरा रही थी।
हिम्मत कर एक दिन
मैंने उससे पूछ ही लिया,
"मुझे क्यों इतना सता रही थी
जब देखो तब मुझे आजमा रही थी,
चल तो रहा था तेरी ही शर्तो पर
तो क्यों हर बार इम्तिहान लिए जा रही थी।

Monika Kumari
B.A. Semester-I
Political Science

MAKE IT GREEN

Lives are crying because it's not clean,
Earth is dying because it's not green_
Earth is our dear Mother, don't pollute it,
She gives us food & shelter, just salute it.
With Global Warming, it's in danger,
Let's save it by becoming strong ranger_
With dying trees & animals, it's in sorrow,
Make green today & green tomorrow.
With melting snow, one day it will sink,
How can we save it, just think
Trees are precious, preserve them,
Water is a treasure, reserve it_
Grow more trees, make Mother Earth green,
Reduce pollution & make her a Queen_

ASHIYA PRAVEEN
Semester-I
2024-28
English

माँ

ये चंद पंक्तियां उसको भी,
जिसने हम सबको जन्म दिया।
सहकर उस गहरी पीड़ा को,
कर पालन पोषण बड़ा किया।
इस मां की महिमा है अपार,
जिसका संरक्षण पाकर मैं जिया।
नयनों, धड़कन में बस मैं हूं,
ख्वाबों, जीवन में बसता हूं।
हम पर उसके अरमान टिके,
हां तभी मुझे बस वही दिखे।
हो सुख या विपदा में साथ रहे,
अपनी तकलीफ स्वतः वो सहे।
हूं बेशक बेकार जमाने को,
वो कर तारीफ, शरीफ कहे।
चरणों में जिसके है जन्नत,
आशीष से पूरी हर मन्नत।
है एक शख्सियत सृष्टि में,
संपूर्ण विश्व जिसे ''मां'' ही कहे।
हर पल ममता की धार बहे,
ये पुत्र भी मां को नमन करे।

Babita Kumari
Semester-I
Sess.-2024-28
Geography

समाज के लोग

सोच बदलो, समाज बदलो
अपने मन की बात बदलो
तू है बेटी कुछ कर न पाएगी
अपने दिल की ये सोच बदलो
मन में डर बसाएंगे
तो आगे न बढ़ पाएंगे
हिम्मत जो तेरी टूट गई
कभी कुछ न कर पाएंगे
न निकलना तू घर से
न तुझको पढ़ना है
न आगे बढ़ना है
इस बात को दिमाग में न भरना है
कदम बढ़ाओगे अगर
उंगली भी उठेगी तुमपे
बनाएंगे बातें भी लोग
न डरना उन बातों से
आगे तुमको बढ़ते जाना है
लोगों की उंगली को भी झुकना है
बाते बनाए जिन लोगों ने
उनको कर दिखलाना है
अपनी एक पहचान हो
एक छोटा सा नाम हो
कर दो नाम रोशन
माता पिता का सम्मान हो।

Annu Soni
Sem 1 (24-28)
Roll no – 317
Hindi

Pressured for Success

Success lies not in what we started but in what we finished. Are you working for the success that you've been dreaming of or you're in the middle of weighing things which path you're going to take? Have you blamed yourself for leaving behind while others achieved their goals in life?

As we get aged we will feel pressured by the things we never achieve while witnessing the success of others. We will start questioning ourselves for the decisions that we make and then feel self-pity. You will come to the point that you're going to blame yourself and the situation where you're in. Sometimes you're going to ask God why you suffer a lot since you've done enough as you think you can. You start comparing yourself to others since you're smarter and more determined than him/her then why do they get a job first over you? The people you think will support you will start asking what's your plan in life, why you did not apply to get a job, and why you did not settle while you're friends and batch mates got their own goals in life. It is very emotional and mentally torturing hearing those questions especially when you have nothing to say but to fake smile at them.

Success is not merely dreaming overnight but it needs to take action to achieve it. Pressure will always be part in the long process of success and it will depend on you if how you're going to deal with it. There are two possibilities in pressure whether it will encourage or discourage you. In handling pressure is like venturing on a stormy sea, you need to overcome the strong wind in order to get on the island, just like in life there are always up's and downs before we will fulfil for the things that we're working. Some people do not measure their success to the things that they have, for the stable job that they're in, for the luxurious life that they experience but it's all about the contentment within yourself and the inner peace that you're enjoying. At this juncture of our life maintaining a good relationship within your family with a happy home, having a good health and providing all the needs can be considered as a biggest success because experiencing this pandemic makes a lot of people pending in achieving their

success.

Some people take risks in building their success, they go abroad and try their luck some make it and some did not. However, life is full of surprises in pursuing success we must take it step by step because it has a due process. We must keep in mind how smoothly we plan for our success but the plan of the Lord will prevail. We must not rush it, stop complaining, do not pressure yourself, and curtail your agony what's meant for you will always be yours. Do not be discouraged by your situation instead make it a motivation who knows tomorrow will be your biggest break and it will be more than enough for what you've longed and prayed for. It may be hard today but all the sweat, tears, and sleepless nights will be paid off one day. Those people who questioned your capabilities, doubted your determination and laughed at your lowest days make them your motivation. Manifest and surround yourself with those people who truly believe in you because whether you lose it they will never stop cheering you to try over again they will always be your biggest support and defender. Let's stop pressuring instead let's start claiming.

NEHA KUMARI VERMA
Semester-I
2024-28
English

सफलता

एक बार एक व्यक्ति ने महान Philosopher सुकरात से पूछा कि "सफलता का रहस्य क्या है?" – What is the secret of success

सुकरात ने उस इंसान को कहा कि वह कल सुबह नदी के पास मिले, वही पर उसे अपने प्रश्न का जवाब मिलेगा।

जब दूसरे दिन सुबह वह व्यक्ति नदी के पास मिला तो सुकरात ने उसको नदी में उतरकर, नदी गहराई की गहराई मापने के लिए कहा।

वह व्यक्ति नदी में उतरकर आगे की तरफ जाने लगा जैसे ही पानी उस व्यक्ति के नाक तक पहुंचा, पीछे से सुकरात ने आकर अचानक से उसका मुंह पानी में डुबो दिया। वह व्यक्ति बाहर निकलने के लिए झटपटाने लगा, कोशिश करने लगा लेकिन सुकरात थोड़े ज्यादा Strong थे। सुकरात ने उसे काफी देर तक पानी में डुबोए रखा।

कुछ समय बाद सुकरात ने उसे छोड़ दिया और उस व्यक्ति ने जल्दी से अपना मुंह पानी से बाहर निकालकर जल्दी जल्दी साँस ली।

सुकरात ने उस व्यक्ति से पूछा – "जब तुम पानी में थे तो तुम क्या चाहते थे? व्यक्ति ने कहा – जल्दी से बाहर निकलकर सांस लेना चाहता था।

सुकरात ने कहा – यही तुम्हारे प्रश्न का उतर है। जब तुम सफलता को उतनी ही तीव्र इच्छा से चाहोगे जितनी तीव्र इच्छा से तुम सांस लेना चाहते हो, तो तुम्हे सफलता निश्चित रूप से मिल जाएगी।"

RANJEET KUMAR
Semester-I
2024-28
Political Sc.

प्रेरणा

तू गगन की अटल चाल,
नित निरंतर अडिग तुल्यमान
कभी रुका नही कभी झुका नहीं,
तू हिम की चोटी समान
ले प्रण नभ के शिखर पर,
चला शान से वो इष्ट पर
कभी डरा नही, ना कभी खौफ था,
शागिर्द का एक ही लक्ष्य था
कभी चोट लगी तो दर्द हुआ,
सत्ता के समक्ष कभी विफल हुआ
उठ सीना तान वो खड़ा हुआ,
ना रण में भयभीत हुआ
बाण की नोंक में धार था,
लक्ष्य बड़ा स्पष्ट था
सुन ह्रदय की करुण पुकार,
लड़ता रहा वो बार बार
एक छोटे से कमरे में, लिन रहा वो ध्यान में
भास्कर का तेज हो, वायु का वेग हो
या मानस जैसा वेद हो, पढ़ता रहा वो बार बार
नित्य क्रिया सफल रही, वर्षों की मेहनत सिद्ध हुई
मस्तक पर ताज सज गई, हुई कठिन तपस्या साकार
एक शिष्य की यही पुकार, तुम उठो लड़ो बारंबार

Prerna kumari
Semester- III (2023-27)
Roll no- 02
Mathematics

Priority

Just like colourful flowers,

We are human creatures.

Our mind bears many options,

Just like bees wanders.

Human creates and face many challenges,

Just like bees confused to choose delicious

nectar among blossom flower

But, priority gives satisfaction

In the race of racism

Some prefer their priors.

Some prefer their beloved

Some prefer their

career as priors,

Some prefer their passion,

But, priority gives satisfaction.

Among flowers or

humans,

Priority should be yourself.

Just like among all bees.

Priority is always given to queen bee.

But, priority gives satisfaction.

Neha Kumari
Semester- III (2023-27)
Roll no- 277
English

Photo gallery

छात्रा प्रेरणा का युवा संसद के लिए चयन

सरिया। सरिया कॉलेज, सरिया के स्नातक सेमेस्टर तीन गणित विषय की छात्रा प्रेरणा कुमारी का चयन हाविकसित भारत युवा संसद हा के लिए राज्य स्तर पर हुआ है। गुरुवार को गिरिडीह कॉलेज, गिरिडीह में गिरिडीह और कोडरमा जिला के विभिन्न कॉलेजों के लगभग 129 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसमें से दस प्रतिभागियों का चयन राज्य स्तर के लिए हुआ है। सरिया कॉलेज, सरिया छात्रा प्रेरणा कुमारी के चयन पर कॉलेज के प्राचार्य, शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मचारियों, राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई तथा छात्रों में उत्साह का माहौल

दैनिक भास्कर गिरिडीह भास्कर 31-10-2024

सरिया कॉलेज में रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन

मतदाता जागरूकता को हुई रंगोली प्रतियोगिता

जागो वोटर

गिरिडीह भास्कर 22-03-2025

सरिया कॉलेज के छात्रों ने चलाया यातायात जागरूकता अभियान, एसडीपीओ भी हुए शामिल

गिरिडीह भास्कर 14-01-2025

सरिया कॉलेज में लगा रक्तदान शिविर, 25 यूनिट रक्त संग्रह

गिरिडीह भास्कर 14-09-2024

...न संरक्षण पर छात्राओं को किया जागरूक

गिरिडीह भास्कर 15-12-2024

अंतर्राष्ट्रीय कविता दिवस का हुआ आयोजन

अपनी मातृभाषा का सम्मान करने से ही हमें सम्मान मिलेगा: डॉ प्रमो...

हमें भविष्य को भी ध्यान में रखकर पर्यावरण संतुलन के प्रति जागरूक बनना होगा: प्राचार्य

गिरिडीह भास्कर 14-01-2025

सरिया कॉलेज में राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस पर संगोष्ठी

गिरिडीह भास्कर 01-10-2024

सरिया-एनएसएस ने चलाया स्वच्छता अभियान

सरिया कॉलेज में लगा रक्तदान शिविर, 25 यूनिट रक्त संग्रह

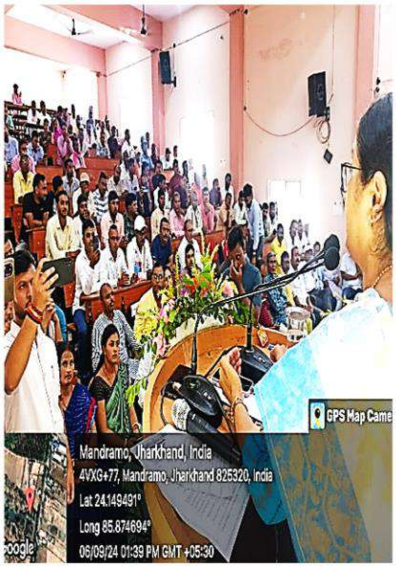

SARIYA COLLEGE, SURIYA

GIRIDIH, JHARKHAND

PERMANENTLY AFFILIATED TO VINOBA BHAVE UNIVERSITY, HAZARIBAG

REG. UNDER 2(F) AND 12(B) OF U.G.C. ACT

Accredited with Grade 'B' by NAAC CGPA 2.35

Sariyacollege1984@gmail.com

www.sariyacollege.ac.in